हरिभूमि
जींद-कैथल भूमि
रोहतक, रविवार 15 फरवरी 2026

तापमान
अधिकतम 26.0 डिग्री
न्यूनतम 11.0 डिग्री

9 400 मीटर दौड़ में संजू अव्वल, हिमांशु द्वितीय

9 विद्यार्थियों ने रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी

खबर संक्षेप

860 ग्राम गांजा फूल पत्ती सहित आरोपी काबू
कैथल। थाना ढांड पुलिस द्वारा एक नशा तस्कर को 860 ग्राम गांजा फूल पत्ती सहित काबू कर लिया। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि थाना ढांड पुलिस प्रभारी इंस्पेक्टर सुनील कुमार की अगुवाई में एएसआई भान सिंह की टीम सायंकालीन गस्त दौरान पंचमुखी चौक ढांड के पास मौजूद थी। सहयोगी सुत्रो से पुलिस को जानकारी मिली थी।

कार ने मारी टक्कर बाइक सवार घायल
जींद। पिल्लूखेड़ा मंडी में तेजरफ्तार कार की टक्कर से बाइक सवार घायल हो गया। पुलिस ने शिकायत के आधार पर कार चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।
पिल्लूखेड़ा मंडी निवासी अतर सिंह ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वह बाइक पर सवार होकर मंडी की तरफ जा रहा था। उसी दौरान तेज रफतार कार ने उसकी बाइक को टक्कर मार दी।

परिजन गए थे बाहर जेवर-सामान चोरी
जींद। रघु नगर निवासी कविता ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वह दिन में दो घंटे के लिए बाहर चली गई थी। वापस लौटी तो मकान का ताला टूटा हुआ था। अंदर से सोने व चांदी के जेवरात, बीस हजार रुपये की नगदी तथा अन्य सामान गायब था। चोरी हुए सामान की कीमत लगभग डेढ़ लाख रुपये थी।

किशोर की हत्या के मामले में चार नाबालिग पकड़े
कैथल। बुधवार शाम को छात्रों के दो गुटों के झगड़े में हुई किशोर नवराज की मौत के मामले में पुलिस ने चार नाबालिगों को निरुध कर बालिग आरोपी को काबू कर लिया है। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि गुहला थाना प्रभारी इंस्पेक्टर बीरभान की अगुवाई में एसआइ रामचंद्र और एसआइ ईश्वर सिंह की टीम ने कार्रवाई करते रामथली निवासी 17 वर्षीय दो नाबालिग, लदाना चक्कू निवासी 16 वर्षीय नाबालिग, खरकां निवासी 17 वर्षीय और डेरा खरकां निवासी 20 वर्षीय नवजोत को पकड़ा है।

साढ़े चार लाख रुपये के आभूषण ले उड़े चोर
जींद। रामबख्स कालोनी निवासी शकुंतला ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि बीती रात चोर मकान का ताला तोड़ कर अंदर घुस गए और सोना, चांदी के जेवरात समेत साढ़े चार लाख कीमत का सामान चोरी कर लिया। घटना का सुबह समय पता चला जब वे सोकर उठे।

फुटबाल फॉर स्कूल कार्यक्रम 19 को
जींद। पीएम श्री स्कूल जवाहर नवोदय विद्यालय खुंगा कोठी के प्राचार्य धनीराम शर्मा ने बताया कि भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के तत्वावधान में पीएम श्री स्कूल जवाहर नवोदय विद्यालय खुंगा कोठी में 19 फरवरी को प्रातः 11 बजे निशुल्क फटबाल वितरित करने का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसमें जिले के 25 स्कूलों को आमंत्रित किया गया है।

ताला तोड़कर घी समेत अन्य सामान चुराया
जींद। गोहिया निवासी संजीत ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उसका अटल पार्क पर वीटा का बूथ है। बीती रात चोरों ने बूथ का ताला तोड़ कर एक टीन 15 लीटर, पांच टीन पांच लीटा, 24 लीटर एक किलो पैकिंग तीन हजार रुपये की नगदी समेत अन्य सामान को चोरी कर लिया है।

संदिग्ध हालात में महिला युवती लापता, मामला दर्ज
जींद। जिले से महिला तथा युवती के संदिग्ध हालात में गायब होने पर संबंधित थाना पुलिस ने अज्ञात लोगों के खिलाफ मामले दर्ज किए हैं। सफीदों निवासी व्यक्ति ने शिकायत में बताया कि गत 12 को सुबह उसकी पत्नी घर से गायब हो गई। वहीं रोहतक रोड निवासी एक महिला ने पुलिस को दी शिकायत दर्ज करवाई है।

शिव-सर्वार्थ सिद्धि और प्रीति योग में आज भोलेनाथ की पूजा करेंगे श्रद्धालु

महाशिवरात्रि पर्व को लेकर जयंती देवी मंदिर में शिवलिंग पर किया गया श्रृंगार।

महाशिवरात्रि आजः जिलेभर के शिवालय पूरी तरह से सजे

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जींद

महाशिवरात्रि को लेकर जिलाभर के शिवालय पूरी तरह से सज गए हैं। महाशिवरात्रि को लेकर मंदिरों में चल रही तैयारियों से वातावरण भी शिवमय हो गया है। रविवार को तड़के से ही बम भोले के जयघोष गूंजने लगेंगे और यह क्रम पूरे दिन जारी रहेगा। महाशिवरात्रि पर्व को देखते हुए मंदिरों की विशेष साज सज्जा की गई है। स्थानीय मंदिरों में जलाभिषेक करने के लिए श्रद्धालुओं को कोई परेशानी न हो, इसके लिए विशेष कदम उठाए गए हैं। इस दौरान शिवभक्त हरिद्वार से गंगा जल लाकर भगवान शिव का अभिषेक करेंगे। इस बार महाशिवरात्रि पर्व पर शिव योग, सर्वार्थ सिद्धि योग, प्रीति योग, आयुष्मान योग, सौभाग्य योग, शोभन योग, साध्य योग, शुक्ल योग, ध्रुव योग, व्यतिपात और वरियान योग रहेगा। इन योगों का एक ही दिन पर बनना अद्भुत संयोग है। यह दिन खासतौर पर भगवान शिव की पूजा के लिए होता है और इस दिन शिवलिंग की पूजा करने का बहुत महत्व माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन भगवान शंकर और माता पार्वती की पूजा-पाठ करने से भक्तों के जीवन में खुशहाली आती है और शिव जी की कृपा मिलती है। प्रथम प्रहर में भगवान शिव का दूध से अभिषेक किया जा सकता है। दूसरे प्रहर में दही से अभिषेक, तीसरे प्रहर में शुद्ध देशी घी से अभिषेक और चौथे प्रहर में शहद से अभिषेक किया जा सकता है। महाशिवरात्रि के दिन शिव स्तुति, शिव मंत्र, शिव सहस्त्रनाम, शिव चालीसा, शिव तांडव, रुद्राष्टक, शिव पुराण और शिव आरती गाना अत्यधिक फलदायी माने जाते हैं।

जयंती देवी मंदिर में होगा रूद्राभिषेक कार्यक्रम
जयंती देवी मंदिर के पुजारी नवीन शास्त्री ने बताया कि भगवान शिव की पूजा करते वक्त बिल्व पत्र, शहद, दूध, दही, शक्कर और गंगाजल से अभिषेक करना चाहिए। ऐसा करने से सारी समस्याएं दूर होती हैं और मांगी हुई मुराद भी पूरी होती है। हर बार की तरह इस बार भी महाशिवरात्रि पर्व विशेष फलदायी है। भगवान शिव की विधि-विधान पूर्वक पूजा करने तथा व्रत रखने से विशेष फल मिलेगा। महाशिवरात्रि पर्व पर रूद्राभिषेक का आयोजन किया जाएगा। भगवान शिव का दूध, दही, शहद और जल से अभिषेक और पूजन, स्तुतिगान किया जाएगा। महाशिवरात्रि पर्व पर चारों पहर की पूजा-अर्चना करने के साथ-साथ अभिषेक भी किया जाएगा।

महाशिव रात्रि पर जयंती देवी मंदिर में व्रतधारियों के लिए बनेगी खीर
महाभारत कालीन जयंती देवी मंदिर में भगवान शिवजी का व्रत रखने वाले श्रद्धालुओं के लिए सामकिये की खीर के प्रबंध में श्रद्धालु तैयारी करते हुए नजर आए। मंदिर पुजारी नवीन कुमार शास्त्री ने बताया कि मंदिर में सामकिये की खीर बनाई जाएगी। मंदिर में चार प्रहर की पूजा की जाएगी। इसके अलावा रूद्राभिषेक कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।

पुरानी पेंशन बहाली संघर्ष समिति ने कैबिनेट मंत्री को सौंपा ज्ञापन

बजट सत्र में मुद्दे को मजबूती के साथ सरकार के समक्ष रखेंगे: बेदी

पुरानी पेंशन कर्मचारी का संवैधानिक, नैतिक और सामाजिक अधिकार

आज लाखों सेवानिवृत्त कर्मचारी बेहाल

जींद। कैबिनेट मंत्री को ज्ञापन सौंपते हुए। *फोटो :हरिभूमि*

कैथल। दमकल कार्यालय में विचार विमर्श करते कर्मचारी नेता।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जींद

पुरानी पेंशन बहाली संघर्ष समिति ईकाई नरवाना द्वारा सरकारी कर्मचारियों की पुरानी पेंशन योजना (ओपी) की बहाली को लेकर कैबिनेट मंत्री व नरवाना विधायक कृष्ण बेदी को ज्ञापन सौंपा। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधान मोहनलाल ने की। ज्ञापन के माध्यम से कर्मचारियों ने साफ शब्दों में कहा कि पुरानी पेंशन कोई कृपा या रियायत नही बल्कि कर्मचारी का संवैधानिक, नैतिक और सामाजिक अधिकार है। जिसे किसी भी कीमत पर समाप्त नहीं होने दिया जाएगा। समिति ने चेताया कि ओपी को खत्म कर लागू की गई एनपीएस और प्रस्तावित यूपीएस योजनाएं कर्मचारियों के भविष्य के साथ किया गया सबसे बडा अन्यायपूर्ण, अस्थिर और बाजार-आधारित प्रयोग है। जिसका दंश आज लाखों सेवानिवृत्त कर्मचारी झेल रहे हैं। प्रदेश महासचिव रिषी नैन व प्रदेश में वरिष्ठ उप प्रधान अनूप लाठर ने कहा कि ओपीएस ही एकमात्र ऐसी व्यवस्था है, जो कर्मचारी को अंतिम वेतन के आधार पर आजीवन सुनिश्चित पेंशन, महंगाई राहत तथा पारिवारिक पेंशन प्रदान करती है। यही योजना कर्मचारी को मानसिक सुरक्षा और सम्मान देती है, जिससे वह बिना भय के शासन-प्रशासन की नीतियों को ईमानदारी से लागू करता है। इसके विपरीत एनपीएस और यूपीएस में न तो पेंशन की गारंटी है और न ही बुढापे की कोई सुनिश्चित सुरक्षा। समिति ने कहा कि शेयर बाजार पर आधारित पेंशन व्यवस्था कर्मचारियों की जीवनभर की कमाई को जोखिम में डालती है। सेवानिवृत्ति के समय मिलने वाली सीमित और अनिश्चित राशि बुढापे में इलाज, दवाइयों और दैनिक जीवन यापन के लिए भी अपर्याप्त साबित हो रही है। यह व्यवस्था केवल कर्मचारी ही नही बल्कि उसके पूरे परिवार के भविष्य पर सीधा हमला है। कैबिनेट मंत्री व नरवाना विधायक कृष्ण बेदी ने कर्मचारियों की मांगों को गंभीरता से सुनते आश्वासन दिया कि आगामी विधानसभा के बजट सत्र में पुरानी पेंशन बहाली के मुद्दे को प्रभावी और मजबूती से सरकार के समक्ष रखा जाएगा।

ये रहे मौजूद
पुरानी पेंशन बहाली संघर्ष समिति ने स्पष्ट चेताया कि यदि बजट सत्र में ओपीएस बहाली को लेकर सरकार ने कोई ठोस, स्पष्ट और नीतिगत निर्णय नहीं लिया तो कर्मचारी वर्ग इसे सरकार की संवेदनहीनता मानेगा और आंदोलन को राज्यव्यापी स्तर पर और अधिक उग्र व व्यापक किया जाएगा। इस मौके पर जिला जींद प्रधान जोगिंदर लोहान, राजबाला, सुधीर मोर, अनिल शर्मा, सुमन, डा. सुखदेव, डा. विकास, सुरेश नैन सहित अनेक कर्मचारी नेता मौजूद रहे।

दमकल कर्मचारी पंचकूला में करेंगे जोरदार प्रदर्शन
कैथल। हरियाणा अग्निशमन विभाग कर्मचारी यूनियन की जिला कार्यकारिणी की महत्वपूर्ण बैठक आज मुख्य दमकल केंद्र कैथल मे आयोजित की गई। बैठक में 12 फरवरी की राष्ट्रीय हड़ताल की समीक्षा के साथ सफल कहा, संगठनात्मक ढांचे के विस्तार तथा 18 फरवरी को पंचकूला में फायर महानिदेशक के निदेशालय पर प्रस्तावित प्रदर्शन की तैयारियों को लेकर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक की अध्यक्षता जिला प्रधान शमशेर सिह ने की व संचालन जिला सचिव गुलाब सिह ने किया।

कैथल। पंचायत मंत्री कृष्णा पंवार गांव प्रेमपुरा की सरपंच परमिंदर कौर व सरपंच प्रतिनिधि सतनाम सिंह को सम्मानित करते। *फोटो :हरिभूमि*

पंचायत मंत्री ने प्रेमपुरा की सरपंच को किया सम्मानित

- विकास कार्यों की बदौलत बदली गांव की तस्वीर

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कैथल

गांव प्रेमपुरा की सरपंच परमिंदर कौर ने अपने उत्कृष्ट विकास कार्यों से जिले का नाम प्रदेश स्तर पर रोशन किया है। प्रदेश के पंचायत मंत्री कृष्ण पंवार ने उन्हें एक प्रतिष्ठित कार्यक्रम में सम्मानित किया। वह जिले से इकलौती महिला सरपंच थीं, जिन्हें इस कार्यक्रम में विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। सम्मान समारोह में उनके पति एवं सरपंच प्रतिनिधि सतनाम सिंह भी मौजूद रहे। कार्यक्रम में प्रदेशभर से सरपंच और पंचायत प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जहां पंचायत स्तर पर उत्कृष्ट कार्य करने वाले जनप्रतिनिधियों को सम्मानित किया गया। पंचायत मंत्री कृष्णा पंवार ने कार्यक्रम को संबोधित करते कहा कि पंचायतों में महिलाओं की भागीदारी गांवों के विकास और प्रशासनिक मजबूती के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि महिला सरपंच अपने नेतृत्व और समर्पण से ग्रामीण विकास की नई मिसाल कायम कर रही हैं। परमिंदर कौर द्वारा गांव प्रेमपुरा में किए गए कार्य अन्य पंचायतों के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। परमिंदर कौर के नेतृत्व में गांव प्रेमपुरा में कई ऐतिहासिक और जनहितकारी कार्य हुए हैं। उन्होंने अपने निजी खर्चे से गांव के लोगों के लिए निःशुल्क एम्बुलेंस सेवा शुरू की, जिससे जरूरतमंद मरीजों को समय पर अस्पताल पहुंचाने में मदद मिल रही है। इसके अलावा उन्होंने अपनी चार कनाल निजी भूमि दान कर गांव में आधुनिक ग्राम सचिवालय का निर्माण करवाया, जिससे पंचायत कार्यों में पारदर्शिता और सुविधा बढ़ी है। सम्मान मिलने के बाद सरपंच परमिंदर कौर ने पंचायत मंत्री और आयोजकों का आभार जताया। उन्होंने कहा कि यह सम्मान केवल उनका नहीं बल्कि पूरे गांव प्रेमपुरा और जिले का सम्मान है।

आज के डिजिटल युग में जागरूकता अत्यंत आवश्यक : सतपाल जांबा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ पूंडरी

विधायक सतपाल जांबा पूंडरी में एक कार्यक्रम में भाग लेते हुए

श्वेता रॉयल सीनियर सेकेंडरी स्कूल पूंडरी द्वारा आयोजित विंटर कार्निवल 2026 कार्यक्रम में विधायक सतपाल जांबा ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की और विद्यार्थियों को संबोधित किया। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय परिसर उत्साह, उमंग और रचनात्मकता से सराबोर नजर आया। विधायक ने विद्यार्थियों की प्रतिभा, आत्मविश्वास और उत्साह की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन बच्चों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षा के साथ-साथ अनुशासन और खेलों में सक्रिय भागीदारी ही उज्ज्वल भविष्य की सच्ची नींव है। जांबा ने बच्चों को साइबर क्राइम से सतर्क रहने का संदेश देते हुए कहा कि आज के डिजिटल युग में जागरूकता अत्यंत आवश्यक है। मोबाइल और सोशल मीडिया का उपयोग समझदारी से करें और किसी भी प्रकार की संदिग्ध गतिविधि से तुरंत दूर रहें। उन्होंने विद्यार्थियों को खेलों में बढ़-चढ़कर भाग लेने और नशे जैसी सामाजिक बुराइयों से दूर रहने का भी आह्वान किया। विधायक ने कहा कि स्वस्थ शरीर और सजग मन ही सफलता की कुंजी है।

हाइड्रोजन प्लांट में लगे कंप्रेशर को ठीक करने का काम शुरू
जींद। हाइड्रोजन प्लांट में लगे कंप्रेशर को ठीक करने का काम शुरू हो गया है। पिछले लगभग दो सप्ताह से कंप्रेशर खराब हो रखा था। कंप्रेशर में तकनीकी खामी आने के कारण वह बीच में चलता-चलता बंद हो जाता था। इसके लिए बाहर से तकनीकी कर्मचारी को बुलाया गया था। उसने जांच के बाद कंप्रेशर को ठीक करने के लिए सामान मंगवाया गया था। वहीं हाइड्रोजन प्लांट में फायर फाइटिंग सिस्टम का भी काम चल रहा है, जो जल्द पूरा होने की उम्मीद है। चार्जिंग के लिए बैटरी मंगवाई गई है। कंप्रेशर ठीक होने के बाद प्लांट में हाइड्रोजन गैस तैयार करने की प्रक्रिया शुरु की जा सकती है। पहले कंप्रेशर को ठीक किया जाएगा उसके बाद आगे की प्रक्रिया शुरू होगा।

15 स्कूलों में 10688 विद्यार्थी परीक्षा देंगे

केंद्रीय विद्यालय शिक्षा बोर्ड की परीक्षाएं 17 से होगी प्रारंभ

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कैथल

सीबीएसइ-केंद्रीय विद्यालय शिक्षा बोर्ड की कक्षा 10वीं व 12वीं की बोर्ड परीक्षाएं 17 फरवरी से शुरू होगी। इसे लेकर जिले में सभी आवश्यक तैयारियां पूरी कर ली हैं। बोर्ड द्वारा पहले ही डेटशीट जारी की जा चुकी है और परीक्षा केंद्रों की व्यवस्था सुनिश्चित कर दी है, ताकि परीक्षाएं शांतिपूर्ण, पारदर्शी और निष्पक्ष ढंग से संपन्न कराई जा सकें। कक्षा 10वीं की परीक्षाएं 17 फरवरी से 11 मार्च तक और कक्षा 12वीं की परीक्षाएं 17 फरवरी से 10 अप्रैल तक आयोजित की जाएंगी। जिले में इस बार कुल 10688 विद्यार्थी परीक्षा देंगे। इनमें कक्षा 10वीं के 5657 और कक्षा 12वीं के 5011 विद्यार्थी शामिल हैं। परीक्षा केंद्रों पर सीसीटीवी कैमरे, पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था, बैठने की समुचित व्यवस्था और सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। नकल रोकने के लिए विशेष निगरानी दल भी तैनात किए जाएंगे। कक्षा 10वीं और 12वीं के विद्यार्थियों के लिए अलग-अलग केंद्र निर्धारित किए गए हैं ताकि परीक्षा संचालन में किसी प्रकार की असुविधा न हो।

निर्धारित समय पर पहुंचें विद्यार्थी
परीक्षा की नोडल अधिकारी अंजू गंभीर ने बताया कि सीबीएसई बोर्ड परीक्षाओं को लेकर प्रशासन और शिक्षा विभाग पूरी तरह सतर्क है। जिले के 90 स्कूलों में से 15 विद्यालयों को परीक्षा केंद्र बनाया गया है। सभी केंद्रों पर पर्यवेक्षक, अतिरिक्त स्टाफ और सुरक्षा कर्मियों की तैनाती कर दी गई है। प्रश्नपत्रों को समय पर केंद्रों तक पहुंचाने और उत्तर पुस्तिकाओं के सुरक्षित वितरण व संग्रहण की विशेष व्यवस्था की गई है। विद्यार्थियों को परीक्षा शुरू होने से कम से कम 30 मिनट पहले केंद्र पर पहुंचने के निर्देश दिए गए हैं।

अंतरराष्ट्रीय बाल कैंसर दिवस आजः बच्चों में ब्लड कैंसर, ब्रेन ट्यूमर काफी खतरनाक, समय पर उपचार जरूरी

नागरिक अस्पताल के रिकार्ड में 10 बच्चों को कैंसर

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जींद

हर वर्ष 15 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय बाल कैंसर दिवस मनाया जाता है। इसका उद्देश्य बच्चों और किशोरों में होने वाले कैंसर के प्रति जागरूकता बढ़ाना, उनके शीघ्र निदान को बढ़ावा देना और कैंसर से पीड़ित बच्चों व उनके परिवारों को बेहतर उपचार और समर्थन प्रदान करना है। इसका मुख्य उद्देश्य कैंसर से होने वाली मौतों को कम करना, मिथकों को दूर करना और उपचार तक समान पहुँच को बढ़ावा देना हैए जो कैंसर के बढ़ते वैश्विक बोझ को कम करने में मदद करता है। जींद नागरिक अस्पताल की बात की जाए तोयहां बस पास के लिए 10 बच्चों ने रजिस्ट्रेशन करवाया हुआ है। जिनको कैंसर है। बच्चों में व्यस्कों की बजाय अलग प्रकार का कैंसर होता है। इनमें ब्लड कैंसर, ब्रेन ट्यूमर जैसी बीमारी जन्मजात भी हो सकती है। इसके अलावा लिंफोमा और न्यूरोब्लास्टोमा भी शामिल हैं। नागरिक अस्पताल में कैंसर पीड़ित मरीजों के बस पास बनाए जाते हैं, यहां इलाज नहीं होता है। काफी बच्चे ऐसे होते हैं जिनको जन्म से ही ब्लड कैंसर होता है। इन बच्चों का इलाज संभव हो जाता हैए लेकिन कई बार ब्लड बदलना पड़ता है। ऐसे में इन बच्चों को काफी परेशानियों से होकर गुजरना पड़ता है। इसके अलावा रीढ़ की हड्डी में गांठ रूपी कैंसर भी होता है। इनका समय पर इलाज होने से यह रोग खत्म हो सकता है। इसके लिए कीमोथेरेपी करवाई जाती है। सही समय पर कीमोथेरेपी करवाने व दवा से कैंसर जैसी बीमारी भी खत्म हो जाती है। स्वास्थ्य विभाग समय-समय पर बच्चों व उनके अभिभावकों को जागरूक करने के लिए शिविर भी लगाता है।

वैक्सीन लगवाना जरूरी
नागरिक अस्पताल के डिप्टी सीएमओ डा. रमेश पांचाल ने कहा कि अस्पताल में 10 बच्चे रजिस्टर्ड हैं, जिनको कैंसर होने पर बस पास की सुविधा दी गई है। इनका इलाज करवाया जाता है। इनमें से काफी बच्चे ठीक भी हो चुके हैं। स्वास्थ्य विभाग बच्चों की जांच के लिए समय-समय पर स्कूलों में जांच शिविर लगाता रहता है। बच्चियों में होने वाली सर्वाइकल कैंसर के लिए अब वैक्सीन आ चुकी है। इसे 18 वर्ष की आयु से पहले बच्चियों को लगवाना जरूरी होता है।

तुरंत जांच करवानी चाहिए
यदि किसी बच्चे को बार-बार बुखार आता है, लगातार थकान रहती है, बच्चा एक्टिव नहीं रहता है, शरीर पर बिना किसी वजह से नीले या बैंगनी निशान हो जाए, हड्डियों और जोड़ों में दर्द रहता हो, अचानक वजन कम होना या भूख नही लगना, सिरदर्दए आंखों में धुंधलापन या संतुलन खोना जैसे संकेत मिले हैं तो तुरंत जांच करवानी चाहिए। हालांकि यह लक्षण किसी अन्य बीमारी के भी हो सकते हैं। इसलिए जांच के बाद ही पता चल सकता है कि बच्चे को क्या बीमारी है।

उमेदपुर की पूर्व सरपंच को अदालत से नहीं मिली राहत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कैथल

गांव उमेदपुर की पूर्व सरपंच नरेंद्र कौर को बड़ा झटका देते अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश डॉ. अमित कुमार गर्ग की अदालत ने उनके चुनाव को रद्द करने के निचली अदालत के फैसले पर मुहर लगा दी है। अदालत ने स्पष्ट किया कि नरेंद्र कौर सरपंच पद के लिए अनिवार्य न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता (8वीं पास) पूरी नहीं करती थीं, जिसके चलते पद के लिए अयोग्य माना है। बता दें कि गांव उमेदपुर के कमीर सिंह और जसप्रीत कौर द्वारा दायर एक याचिका में आरोप लगाया था कि नरेंद्र कौर ने चुनाव के दौरान अपनी शैक्षणिक योग्यता के बारे में गलत जानकारी दी थी। इससे पहले चुनाव न्यायाधिकरण, गुहला ने 27 नवंबर 2025 को नरेंद्र कौर का चुनाव रद्द कर दिया था। फैसले के खिलाफ नरेंद्र कौर ने जिला अदालत में अपील दायर की थी। सुनवाई के दौरान न्यायाधीश ने पाया कि अपीलकर्ता नरेंद्र कौर के पास 8वीं कक्षा उत्तीर्ण होने का वैध प्रमाण नहीं था, जो हरियाणा पंचायती राज अधिनियम के तहत सरपंच पद के लिए अनिवार्य है। अदालत ने अपने आदेश में कहा कि ट्रायल कोर्ट द्वारा दिया गया निर्णय पूरी तरह सही है।

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

24.3% लोगों ने अपनी पहली सैलरी या व्यक्तिगत आय के बाद पहली बार सोना खरीदा, जबकि 23.9% ने इसे निवेश के रूप में चुना। यह ट्रेंड पीढ़ियों के व्यवहार में अंतर भी दिखाता है। जेन जी छोटे और व्यक्तिगत माइलस्टोन से सोने की खरीद शुरू कर रहे हैं, जबकि मिलेनियल्स इसे जीवन की बड़ी घटनाओं और दीर्घकालिक सुरक्षा से जोड़कर देखते हैं।

जेन जी और मिलेनियल्स की पहली पसंद बना सोना

इस समय सोना निवेश का बढ़िया विकल्प बनकर उभर रहा है। जेन जी और मिलेनियल्स यानी युवा भारतीयों का सोने पर भरोसा मजबूत बना हुआ है, लेकिन इसे खरीदने का तरीका धीरे-धीरे बदल रहा है। स्मिटन पल्सएआई के सर्वे में सामने आया है कि सोने की खरीद अब अधिक व्यक्तिगत और छोटी रकम/मात्रा में होने लगी है। 18-39 वर्ष के 5,000 उपभोक्ताओं पर आधारित इस अध्ययन के अनुसार पारंपरिक, परिवार-केंद्रित खरीदारी की जगह अब तर्क-आधारित और व्यक्तिगत फैसलों का महत्व बढ़ रहा है। जेन जी और मिलेनियल्स सोने की खरीद को अब शादी-समारोह से आगे बढ़कर व्यक्तिगत माइलस्टोन और पहली सैलरी जैसे शुरुआती निवेश के रूप में देख रहे हैं।

सुरक्षा के मामले में पहली पसंद

आधुनिक निवेश विकल्पों की बढ़ती पहुंच के बावजूद युवा भारतीयों के लिए सोना अब भी सबसे भरोसेमंद निवेश बना हुआ है। सर्वे के अनुसार यदि आज 25,000 रुपये निवेश करने हों तो 61.9% उत्तरदाता सोने को चुनेंगे। यह आंकड़ा म्यूचुअल फंड (16.6%), फिक्स्ड डिपॉजिट (13%), शेयर बाजार (6.6%) और क्रिप्टो (1.9%) से काफी आगे है। आर्थिक अनिश्चितता के समय भी सोने पर भरोसा कायम है। 65.7% लोगों ने कहा कि बैंक बचत, म्यूचुअल फंड या इक्विटी की तुलना में सोना उन्हें सबसे सुरक्षित विकल्प लगता है। यह ट्रेंड दर्शाता है कि जेन जी और मिलेनियल्स दोनों के लिए सोना अब भी वित्तीय सुरक्षा का प्रमुख सहारा बना हुआ है।

छोटी खरीदारी बन रही नया ट्रेंड

सर्वे से स्पष्ट संकेत मिलता है कि अब सोने की बड़ी और कम अंतराल वाली खरीदारी से हटकर छोटी और नियमित खरीदारी का रुझान तेजी से बढ़ रहा है। हाल की 61.9% खरीद 5 ग्राम से कम की रही, जिसमें 27.5% लोगों ने 2 ग्राम से कम और 34.4% ने 2 से 5 ग्राम के बीच सोना खरीदा। अब 42% परिवार समय-समय पर छोटी मात्रा में सोना खरीदना पसंद कर रहे हैं, जबकि 58% अभी भी एकमुश्त और अवसर आधारित खरीद करते हैं।

परिवार की भूमिका भी महत्वपूर्ण

निवेश के मामले में परिवार की भूमिका अभी भी महत्वपूर्ण है, लेकिन सोने की खरीद के फैसले अब तेजी से व्यक्तिगत होते जा रहे हैं। सर्वे के मुताबिक 66.7% उत्तरदाताओं ने कहा कि आज सोना खरीदना मुख्य रूप से व्यक्तिगत और स्वयं प्रेरित निर्णय बन चुका है, न कि केवल पारिवारिक प्रभाव से लिया गया फैसला। 42.3% लोगों ने बताया कि उनके घर में हाल की सोने की खरीद की पहल उन्होंने खुद की, जबकि 40% ने माता-पिता या बड़े परिवार के सदस्यों को इसका श्रेय दिया। यह बदलाव पीढ़ियों के बीच स्पष्ट अंतर को दिखाता है। जेन जी अब कब और कैसे सोना खरीदना है, इसका फैसला खुद लेने में अधिक आत्मविश्वास दिखा रहे हैं और इसे व्यक्तिगत वित्तीय निर्णय मानते हैं। वहीं, मिलेनियल्स अब भी गोल्ड को परिवार की योजना और दीर्घकालिक सुरक्षा के नजरिए से देखते हैं, जहां खरीदारी सामूहिक प्राथमिकताओं से प्रभावित रहती है।

अब शादियों तक सीमित नहीं

दिलचस्प बात यह है कि पहली बार सोना खरीदना अब केवल शादी जैसे अवसरों तक सीमित नहीं रहा। 24.3% लोगों ने अपनी पहली सैलरी या व्यक्तिगत आय के बाद पहली बार सोना खरीदा, जबकि 23.9% ने इसे निवेश के रूप में चुना। यह ट्रेंड पीढ़ियों के व्यवहार में अंतर भी दिखाता है। जेन जी छोटे और व्यक्तिगत माइलस्टोन से सोने की खरीद शुरू कर रहे हैं, जबकि मिलेनियल्स इसे जीवन की बड़ी घटनाओं और दीर्घकालिक सुरक्षा से जोड़कर देखते हैं।

सोने की खरीद में डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग बढ़ा है। इसके बावजूद सोने की खरीदारी में अभी भी पारंपरिक चैनल्स पर भरोसा अधिक है। सर्वे के अनुसार, 38.3% लोग सबसे अधिक सोना बड़ी ब्रांडेड ज्वेलरी चेन से खरीदते हैं, जबकि 34.7% उपभोक्ता स्थानीय ज्वैलर पर भरोसा करते हैं। इसके विपरीत, केवल 5.2% लोग ही ऑनलाइन प्लेटफॉर्म या ऐप के जरिए सोना खरीद रहे हैं। खरीद से जुड़ी चिंताओं में शुद्धता और प्रामाणिकता सबसे बड़ी चिंता के रूप में सामने आई, जिसे 49.4% उत्तरदाताओं ने प्रमुख कारण बताया।

खरीद के बाद पछतावा भी बड़ा संकेत

सर्वे की सबसे महत्वपूर्ण बात यह सामने आई कि सोना खरीदने के बाद बड़ी संख्या में युवा उपभोक्ता असमंजस या पछतावा महसूस करते हैं। करीब 67.1% उत्तरदाताओं ने माना कि उन्हें अक्सर या कभी-कभी सोना खरीदने के बाद पछतावा हुआ है। इसके पीछे सबसे बड़ी वजह खरीदी गई कीमत (38.9%) रही, जबकि 33.5% लोगों ने ज्वैलरी, सिक्के या डिजिटल गोल्ड जैसे फॉर्मेट को लेकर भ्रम को कारण बताया। वहीं 18.8% ने पर्याप्त जानकारी के अभाव को जिम्मेदार ठहराया। यह ट्रेंड दिखाता है कि सोने पर भरोसा मजबूत है, लेकिन खरीद प्रक्रिया को लेकर युवाओं का आत्मविश्वास अभी भी पूरी तरह विकसित नहीं हुआ है।

भविष्य में सोना खरीदने का इरादा

लोग भविष्य में भी खूब सोना खरीदना चाहते हैं। इस सर्वे में यह भी सामने आया कि भविष्य में सोना खरीदने का इरादा बहुत मजबूत है। 52.7% उत्तरदाता अगले 12 से 24 महीनों में सोना खरीदने के लिए "बहुत संभावना" दिखाते हैं। कुल मिलाकर सोने का स्थान युवा भारतीयों के बीच अब भी अडिग है, हालांकि खरीदारी के तरीके बदल रहे हैं। छोटे निवेश, व्यक्तिगत निर्णय और पारंपरिक खरीदारी चैनल्स में भरोसा दर्शाता है कि सोना का आकर्षण मजबूत है और आने वाले समय में भी यह सुरक्षित निवेश के रूप में रहेगा।

महंगाई के दौर में बच्चों के लिए बनाएं फंड

उच्च शिक्षा के लिए करें मजबूत प्लानिंग

- तेजी से महंगी हो रही पढ़ाई, अभी नहीं संभले तो पड़ेगा भारी
- एसआईपी समेत कई निवेश विकल्पों के बारे में सोचना होगा
- एक संतुलित, बहुआयामी और समयबद्ध रणनीति बनानी होगी

तैयारी

बिजनेस डेस्क

आज के दौर में शिक्षा केवल एक आवश्यकता नहीं, बल्कि भविष्य की सबसे बड़ी पूंजी बन चुकी है, लेकिन इसके साथ स्कूल और कॉलेज की फीस सामान्य महंगाई दर से कहीं ज्यादा तेजी से बढ़ रही है। इंटरनेशनल बोर्ड, प्रोफेशनल कोर्स, विदेश में पढ़ाई, हॉस्टल और रहने-खाने का खर्च ये सभी मिलकर उच्च शिक्षा को बेहद महंगा बना देते हैं। ऐसे में माता-पिता के लिए यह जरूरी हो गया है कि वे समय रहते अपने बच्चों की पढ़ाई के लिए व्यवस्थित और दीर्घकालिक वित्तीय योजना बनाएं। अक्सर देखा जाता है कि माता-पिता एक अनुमानित रकम तय कर लेते हैं और हर महीने एसआईपी शुरू कर देते हैं। यह एक अच्छा कदम है, लेकिन सवाल यह है कि क्या केवल एसआईपी पर निर्भर रहना पर्याप्त है? बदलते आर्थिक हालात और शिक्षा महंगाई को देखते हुए जवाब है नहीं। जरूरत है एक संतुलित, बहुआयामी और समयबद्ध रणनीति की।

जल्दी शुरुआत ही सबसे बड़ा फायदा

उच्च शिक्षा की योजना में समय सबसे महत्वपूर्ण कारक है। यदि बच्चा छोटा है और आप अभी से निवेश शुरू करते हैं, तो कंपाउंडिंग का लाभ कई गुना बढ़ जाता है। उदाहरण के तौर पर, यदि आप 10–15 साल तक नियमित एसआईपी करते हैं, तो छोटी-छोटी मासिक बचत भी बड़ा फंड बना सकती है। देर से शुरुआत करने पर आपको अधिक रकम निवेश करनी पड़ सकती है, जिससे घरेलू बजट पर दबाव बढ़ सकता है।

एक निवेश विकल्प पर निर्भर न रहें

अक्सर लोग पूरे शिक्षा फंड को इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश कर देते हैं और फीस भरने तक उसे वहीं रखते हैं। लेकिन यदि फीस के समय बाजार में गिरावट आ जाए, तो आपके फंड की वैल्यू घट सकती है। इसलिए जरूरी है कि जैसे-जैसे फीस का समय नजदीक आए, निवेश को सुरक्षित विकल्पों में शिफ्ट किया जाए। उदाहरण के लिए लक्ष्य से 3–4 साल पहले धीरे-धीरे डेट फंड या एफडी में ट्रांसफर करें। अंतिम 1–2 साल में जोखिम बहुत कम कर दें और पैसा लिक्विड या सुरक्षित साधनों में रखें। यह रणनीति आपको बाजार के उतार-चढ़ाव से बचाती है।

शिक्षा महंगाई का सही अनुमान लगाएं

भारत में शिक्षा महंगाई दर सामान्य महंगाई से अधिक, लगभग 8–12% तक मानी जाती है। यदि आज किसी कोर्स की फीस 10 लाख रुपये है, तो 10 साल बाद वही कोर्स 20–25 लाख रुपये तक हो सकता है। इसलिए भविष्य की लागत का अनुमान लगाते समय महंगाई को शामिल करना जरूरी है। केवल वर्तमान फीस देखकर योजना बनाना पर्याप्त नहीं है।

अन्य खर्चों को भी जोड़ें

अक्सर माता-पिता केवल ट्यूशन फीस को ध्यान में रखकर फंड बनाते हैं, जबकि वास्तविक खर्च इससे कहीं अधिक होता है। विशेषकर विदेश में पढ़ाई के मामले में रहने और खाने का खर्च, हेल्थ इंश्योरेंस, यात्रा खर्च, लैपटॉप और अन्य गैजेट्स, एप्लिकेशन फीस, इंटर्नशिप या प्रोजेक्ट खर्च इन सभी खर्चों को जोड़कर ही वास्तविक लक्ष्य तय करें। विदेश में पढ़ाई का खर्च तो डॉलर या अन्य विदेशी मुद्रा में होने के कारण और भी बढ़ सकता है।

एजुकेशन लोन से न घबराएं

कई माता-पिता एजुकेशन लोन को नकारात्मक नजर से देखते हैं, लेकिन यह सोच हमेशा सही नहीं होती। यदि समझदारी से लिया जाए, तो एजुकेशन लोन रिटायरमेंट सेविंग्स को बचाने में मदद कर सकता है। उदाहरण के लिए, यदि आपके पास शिक्षा और रिटायरमेंट दोनों के लिए सीमित फंड है, तो शिक्षा के लिए आंशिक लोन लेकर आप अपने रिटायरमेंट कॉर्पस को सुरक्षित रख सकते हैं। इसके अलावा, एजुकेशन लोन पर टैक्स लाभ भी मिलता है और पढ़ाई पूरी होने के बाद बच्चे खुद इसे चुकाने में योगदान दे सकते हैं।

रिटायरमेंट से समझौता न करें

बच्चों की पढ़ाई महत्वपूर्ण है, लेकिन अपनी रिटायरमेंट सुरक्षा को नजरअंदाज करना भविष्य में आर्थिक संकट पैदा कर सकता है। शिक्षा के लिए आप लोन ले सकते हैं, लेकिन रिटायरमेंट के लिए नहीं। इसलिए दोनों लक्ष्यों में संतुलन बनाना जरूरी है।

नियमित समीक्षा करें

हर साल अपनी योजना की समीक्षा करें। यदि आपकी आय बढ़ती है, तो **SIP** की राशि भी बढ़ाएं। अगर लक्ष्य की लागत बदलती है या बच्चे की रुचि अलग दिशा में जाती है, तो योजना में संशोधन करें।

अनुशासन ही सफलता की कुंजी

बढ़ती महंगाई के इस दौर में बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए पहले से तैयारी करना अनिवार्य हो गया है। केवल बचत नहीं, बल्कि स्मार्ट निवेश, जोखिम प्रबंधन और समय पर समीक्षा ही मजबूत शिक्षा फंड का आधार बनते हैं। जल्दी शुरुआत, विविध निवेश, महंगाई का सही अनुमान और जरूरत पड़ने पर एजुकेशन लोन ये सभी कदम मिलकर आपके बच्चे के सपनों को साकार कर सकते हैं।

प्राइवेट नौकरी वाले जान लें अहम टिप्स

आर्थिक रूप से रहेंगे मजबूत

- अपने वेतन का करीब 20 फीसदी शुरू से ही निवेश करें
- अपना बजट बनाएं, लक्ष्य तय करें और गैरजरूरी खर्चों से बचें
- सैलरी 10% बढ़ती है, तो कम से कम 5% अतिरिक्त निवेश करें
- व्यक्तिगत हेल्थ इंश्योरेंस जरूर लें, यह बीमारी में काम आएगा

सुझाव

बिजनेस डेस्क

प्राइवेट सेक्टर में नौकरी करने वाले लाखों युवाओं के लिए करियर की शुरुआत उत्साह और सपनों से भरी होती है। अच्छी सैलरी, कॉर्पोरेट लाइफस्टाइल और तेजी से बढ़ते अवसर आकर्षित करते हैं, लेकिन इस चमक-दमक के पीछे एक सच्चाई भी है प्राइवेट नौकरी में सरकारी कर्मचारियों जैसी पेंशन, स्थायी सुरक्षा या व्यापक सामाजिक लाभ अक्सर उपलब्ध नहीं होते। ऐसे में यदि वित्तीय योजना मजबूत न हो, तो भविष्य असुरक्षित हो सकता है। करियर की शुरुआत में की गई छोटी वित्तीय गलतियां समय के साथ बड़ी समस्या बन जाती हैं। इसलिए जरूरी है कि शुरुआत से ही सतर्क रहें और कुछ सामान्य लेकिन गंभीर वित्तीय भूलों से बचें।

अनियंत्रित जीवनशैली की शुरुआत

अक्सर युवा नौकरी लगते ही खर्च की आजादी का आनंद लेने लगते हैं। सैलरी आते ही किराया, घूमना-फिरना, गैजेट्स और ऑनलाइन शॉपिंग पर पैसा खर्च हो जाता है। लेकिन यदि आय और खर्च का स्पष्ट बजट न हो, तो बचत पीछे छूट जाती है। वित्तीय स्थिरता की पहली शर्त है बजट बनाना। 50-30-20 फॉर्मूला एक आसान तरीका है। इसमें 50% आय जरूरी खर्चों के लिए, 30% लाइफस्टाइल और शौक के लिए तथा 20% बचत और निवेश के लिए रखा जाता है। समस्या तब होती है जब लोग बचत वाले हिस्से को टाल देते हैं। कई बार दिखावे या सामाजिक दबाव में जरूरत से ज्यादा खर्च कर बैठते हैं। याद रखें, कमाई से ज्यादा जरूरी है पैसे का प्रबंधन।

वेतन बढ़ा, बचत नहीं

प्राइवेट सेक्टर में समय-समय पर इंक्रीमेंट और प्रमोशन मिलते हैं। लेकिन अक्सर देखा गया है कि वेतन बढ़ते ही खर्च भी उसी अनुपात में बढ़ जाता है। इसे लाइफस्टाइल इन्फ्लेशन कहते हैं। नई कार, महंगा मोबाइल, ब्रांडेड कपड़े, बार-बार ट्रैवल ये सब बढ़ती आय के साथ जुड़ जाते हैं। नतीजा यह होता है कि बचत की दर स्थिर ही रहती है या घट जाती है। समझदारी यह है कि हर वेतन वृद्धि के साथ निवेश भी बढ़ाया जाए।

निवेश को टालना

अभी तो करियर की शुरुआत है, बाद में निवेश करेंगे यह सोच सबसे खतरनाक है। निवेश में समय सबसे बड़ा हथियार है। जितनी जल्दी शुरुआत करेंगे, उतना ही कंपाउंडिंग का फायदा मिलेगा। मान लीजिए कोई व्यक्ति 25 साल की उम्र से हर महीने 5,000 रुपये एसआईपी में निवेश करता है और दूसरा 35 साल की उम्र से 10,000 रुपये। लंबे समय में पहले व्यक्ति का फंड अधिक हो सकता है, क्योंकि उसे 10 साल का अतिरिक्त समय मिला। प्राइवेट नौकरी में पेंशन की गारंटी नहीं होती। इसलिए रिटायरमेंट फंड बनाना आपकी जिम्मेदारी है। म्यूचुअल फंड एसआईपी, पीपीएफ, एनपीएस या अन्य लंबी अवधि के साधनों में नियमित निवेश जरूरी है।

इमरजेंसी फंड की अनदेखी

प्राइवेट सेक्टर में नौकरी की स्थिरता सीमित हो सकती है। अचानक छंटनी, कंपनी बंद होना या व्यक्तिगत कारणों से नौकरी छोड़नी पड़ सकती है। ऐसे समय में यदि इमरजेंसी फंड न हो, तो आपको कर्ज लेना पड़ सकता है या निवेश तोड़ना पड़ सकता है। कम से कम 6 से 9 महीने के खर्च के बराबर राशि रखें।

बीमा को हल्के में लेना

कई लोग सोचते हैं कि कंपनी द्वारा दिया गया ग्रुप हेल्थ इंश्योरेंस पर्याप्त है। लेकिन नौकरी बदलते ही यह सुविधा खत्म हो सकती है। इसलिए व्यक्तिगत हेल्थ इंश्योरेंस लेना जरूरी है। इसके अलावा, यदि परिवार आप पर निर्भर है, तो टर्म लाइफ इंश्योरेंस अनिवार्य है। यह कम प्रीमियम में बड़ी सुरक्षा देता है।

कर्ज का गलत इस्तेमाल

क्रेडिट कार्ड का अत्यधिक उपयोग और पर्सनल लोन लेना भी बड़ी वित्तीय गलती है। 18% से 36% तक ब्याज दर आपकी बचत को खत्म कर सकती है। कर्ज लें तो केवल जरूरी जरूरतों के लिए, जैसे होम लोन।

अनुशासन ही असली सुरक्षा

प्राइवेट नौकरी में अवसर बहुत हैं, लेकिन जोखिम भी कम नहीं। यहां भविष्य की सुरक्षा आपके अपने हाथ में है। बजट बनाना, लाइफस्टाइल पर नियंत्रण, समय पर निवेश, पर्याप्त बीमा और इमरजेंसी फंड ये पांच स्तंभ आपकी आर्थिक मजबूती की नींव हैं। वहीं, आज का अनुशासन आपको आर्थिक स्वतंत्रता और मानसिक शांति दे सकता है।

शेयर बाजार की बदहाली से इक्विटी म्यूचुअल फंड में घटा निवेश

- गोल्ड ईटीएफ में निवेश 106% बढ़ा
- शेयर बाजार में इन दिनों खूब दिख रही उठापटक
- आम निवेशकों का सेंटिमेंट प्रभावित हुआ

जानकारी

बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में इन दिनों उठा-पटक का दौर चल रहा है। किसी दिन शेयर बाजार का सूचकांक कुलांचे भरते हुए ऊपर चढ़ जाता है तो किसी दिन जमीन पर लोटने लगता है। तभी तो इस साल के पहले महीने यानी जनवरी 2026 में इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश थोड़ा कम हुआ। स्थिति यह रही कि इस महीने गोल्ड ईटीएफ में इक्विटी म्यूचुअल फंड के मुकाबले ज्यादा निवेश हुआ। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स ऑफ इंडिया (एएमएफआई) के आंकड़ों के मुताबिक जनवरी महीने के दौरान इक्विटी म्यूचुल फंड्स में 24,028 करोड़ रुपये आए। इससे एक महीने पहले यानी दिसंबर 2025 के दौरान 28,054 करोड़ रुपये आए थे। मतलब कि इस महीने निवेश में 14% की कमी आई है। यदि साल दर साल के आधार पर देखें तो जनवरी 2025 की तुलना में इस साल जनवरी में यह गिरावट 39% रही है। पिछले साल जनवरी के दौरान इस फंड में 39,687 करोड़ रुपये का निवेश हुआ था।

इक्विटी फंड्स में कौन पहली पसंद जनवरी के दौरान अलग-अलग तरह के इक्विटी फंडों में, फ्लेक्सीकैप फंड निवेशकों की पहली पसंद बने रहे। इनमें सबसे ज्यादा 7,672 करोड़ रुपये का निवेश आया। इसके बाद मिडकैप फंड में 3,185 करोड़ रुपये और लार्ज एंड मिड-कैप फंड में 3,181 करोड़ रुपये का निवेश आया। स्मॉलकैप फंड में 2,942 करोड़ रुपये आए, लेकिन ईएलएसएस फंड से निवेशकों ने 593 करोड़ रुपये निकाल लिए। अगर पिछले महीने से तुलना करें, तो फोकस्ड फंड में निवेश 47% बढ़ा। दिसंबर 2025 में इनमें 1,056 करोड़ रुपये आए थे, जो जनवरी 2026 में बढ़कर 1,556 करोड़ रुपये हो गए। लार्जकैप फंड और सेक्टोरल/थीमैटिक फंड में भी पिछले महीने की तुलना में क्रमशः 28% और 10% ज्यादा निवेश आया। वहीं, मिड-कैप और स्मॉल-कैप फंड में निवेश पिछले महीने के मुकाबले 24% और 23% घट गया।

डेट फंड का चला जादू

जनवरी 2026 के दौरान डेट फंड में 74,827 करोड़ रुपये का निवेश आया। यह अच्छी खबर है क्योंकि पिछले दो महीनों (नवंबर और दिसंबर 2025) में डेट फंड से कुल 1.58 लाख करोड़ रुपये बाहर चले गए थे। पिछले साल जनवरी की तुलना में इस साल डेट फंड में निवेश 42% कम रहा, जब 1.28 लाख करोड़ रुपये आए थे। डेट फंड की 16 अलग-अलग श्रेणियों में से, ओवरनाइट फंड में सबसे ज्यादा 46,280 करोड़ रुपये का निवेश आया। वहीं, कॉर्पोरेट बॉन्ड फंड से 11,472 करोड़ रुपये निकाल लिए गए। लिक्विड फंड में 30,681 करोड़ रुपये और मनी मार्केट फंड में 12,763 करोड़ रुपये का निवेश आया।

हाइब्रिड फंड में भी रौनक

बीते जनवरी महीने के दौरान हाइब्रिड फंड में 17,356 करोड़ रुपये का निवेश आया। यह दिसंबर 2025 के 10,755 करोड़ रुपये की तुलना में 61% ज्यादा है। पिछले साल जनवरी 2025 की तुलना में यह आंकड़ा 98% बढ़ा है, जब 8,767 करोड़ रुपये का निवेश आया था। हाइब्रिड फंड की छह श्रेणियों में से, मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड में सबसे ज्यादा 10,485 करोड़ रुपये का निवेश आया। इसके बाद आर्बिट्राज फंड में 3,293 करोड़ रुपये आए। आर्बिट्राज फंड में तो पिछले महीने के मुकाबले निवेश में 2,507% की भारी बढ़ोतरी हुई, जो दिसंबर 2025 में सिर्फ 126 करोड़ रुपये था। हालांकि, इक्विटी सेविंग्स फंड और कंजरवेटिव हाइब्रिड फंड में पिछले महीने के मुकाबले क्रमशः 81% और 35% की गिरावट आई।

ईटीएफ में खूब हुआ निवेश

अन्य स्कीमों, जिनमें ईटीएफ और इंडेक्स फंड जैसे पैसिव फंड शामिल हैं, में जनवरी में 39,954 करोड़ रुपये का निवेश आया। यह दिसंबर 2025 के 26,723 करोड़ रुपये से 50% ज्यादा है। गोल्ड ईटीएफ में तो सबसे ज्यादा 24,039 करोड़ रुपये का निवेश आया, जो पिछले महीने के मुकाबले 106% ज्यादा है। हो सकता है कि सोने की कीमतों में तेज बढ़ोतरी की वजह से निवेशक इस ओर आकर्षित हुए। अन्य ईटीएफ में 15,005 करोड़ रुपये का निवेश आया। विदेशों में निवेश करने वाले फंड-ऑफ-फंड में भी भारी उछाल देखा गया।

चालीस की उम्र में कर रहे हैं रिटायरमेंट प्लानिंग तो अपना लें ये अहम टिप्स

इस उम्र में भविष्य की आर्थिक सुरक्षा की असली तैयारी शुरू होती हैं, अच्छी रणनीति बनाकर निवेश करेंगे तो नहीं होगी परेशानी, भविष्य सुरक्षित रहेगा।

शुरुआत

बिजनेस डेस्क

सबसे पहले आय, खर्च, ईएमआई व निवेश की स्थिति समझें

रिटायरमेंट प्लानिंग अक्सर लोग 50 की उम्र के बाद शुरू करने की सोचते हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि 40 की उम्र वह मोड़ है, जहां से भविष्य की आर्थिक सुरक्षा की असली तैयारी शुरू होती है। यह उम्र आमतौर पर करियर का सबसे स्थिर और आय का सबसे मजबूत दौर होता है। आमदनी अपने शिखर की ओर बढ़ रही होती है, लेकिन साथ ही जिम्मेदारियां भी बढ़ जाती हैं। बच्चों की पढ़ाई, होम लोन की ईएमआई, माता-पिता की देखभाल और जीवनशैली से जुड़े खर्च। ऐसे में यदि आपने अब तक रिटायरमेंट के बारे में गंभीरता से नहीं सोचा है, तो अब वक्त है इसे प्राथमिकता देने का। 40 की उम्र में रिटायरमेंट प्लानिंग का मतलब है सीमित समय में अधिक प्रभावी रणनीति अपनाना। आपके पास अब 20–25 साल का कार्यकाल बचा हो सकता है। इस दौरान सही निवेश, अनुशासन और जोखिम प्रबंधन से आप एक मजबूत रिटायरमेंट कॉर्पस तैयार कर सकते हैं। सबसे पहले अपनी आय, खर्च, ईएमआई, मौजूदा निवेश और बीमा की स्थिति को स्पष्ट रूप से समझें। हर महीने कितना पैसा बचता है और कितना खर्च होता है, इसका विस्तृत विश्लेषण करें। इसके साथ ही महंगाई दर, भविष्य के मेडिकल खर्च और रिटायरमेंट के बाद की जीवनशैली को ध्यान में रखते हुए यह अनुमान लगाएं कि आपको कितनी रकम की जरूरत होगी। विशेषज्ञ मानते हैं कि रिटायरमेंट के बाद भी वर्तमान खर्च का कम से कम 70–80% हर महीने चाहिए होगा।

रिटायरमेंट को प्राथमिकता बनाएं

अक्सर लोग बच्चों की पढ़ाई या घर खरीदने को प्राथमिकता देते हैं और रिटायरमेंट को टालते रहते हैं। लेकिन याद रखें, बच्चों को शिक्षा के लिए लोन मिल सकता है, रिटायरमेंट के लिए नहीं। ईपीएफ, पीपीएफ, एनपीएस और म्यूचुअल फंड एसआईपी जैसे साधनों में नियमित निवेश बढ़ाएं। कोशिश करें कि अपनी आय का कम से कम 15–25% हिस्सा रिटायरमेंट के लिए सुरक्षित रखें। यदि संभव हो तो हर साल आय बढ़ने के साथ निवेश राशि भी बढ़ाएं।

महंगे कर्ज से जल्दी छुटकारा पाएं

क्रेडिट कार्ड और पर्सनल लोन पर 12% से 24% तक ब्याज देना आपकी संपत्ति निर्माण की क्षमता को कमजोर करता है। ऐसे कर्ज को प्राथमिकता से खत्म करें। होम लोन अपेक्षाकृत सस्ता होता है, लेकिन यदि अतिरिक्त राशि उपलब्ध हो तो प्री-पेमेंट जरूर करें। कर्ज मुक्त जीवन रिटायरमेंट की दिशा में बड़ा कदम है।

इमरजेंसी फंड बनाना न भूलें

रिटायरमेंट निवेश के साथ-साथ एक मजबूत इमरजेंसी फंड होना भी जरूरी है। कम से कम 6 से 9 महीने के खर्च के बराबर राशि सेविंग अकाउंट या लिक्विड फंड में रखें। यह फंड अचानक नौकरी छूटने, बीमारी या किसी अप्रत्याशित खर्च के समय सुरक्षा कवच का काम करेगा। इससे आपको निवेश तोड़ने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

टैक्स प्लानिंग से बढ़ाएं बचत

सही टैक्स प्लानिंग से आप अपनी निवेश क्षमता बढ़ा सकते हैं। आयकर की धारा 80सी, एनपीएस में अतिरिक्त निवेश (80सीसीडी(1बी)), हेल्थ इंश्योरेंस (80डी) और कैपिटल गेन प्लानिंग का लाभ उठाएं। टैक्स बचत केवल बचत नहीं है, बल्कि आपके भविष्य के लिए अतिरिक्त निवेश का अवसर है।

पर्याप्त बीमा सुरक्षा सुनिश्चित करें

40 की उम्र में परिवार आप पर निर्भर होता है। इसलिए पर्याप्त टर्म लाइफ इंश्योरेंस जरूर लें, जो कम से कम आपकी वार्षिक आय का 10–15 गुना हो। साथ ही, एक अच्छा हेल्थ इंश्योरेंस प्लान भी रखें, क्योंकि उम्र बढ़ने के साथ मेडिकल खर्च तेजी से बढ़ते हैं। समय-समय पर अपनी पॉलिसी की समीक्षा करना भी जरूरी है। बच्चों की शिक्षा एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है, लेकिन इसे रिटायरमेंट की कीमत पर पूरा करना समझदारी नहीं है। शिक्षा के लिए अलग निवेश योजना बनाएं, जैसे कि इक्विटी म्यूचुअल फंड या चाइल्ड प्लान। ध्यान रखें कि लंबी उम्र एक बड़ा वित्तीय जोखिम है। यदि रिटायरमेंट फंड पर्याप्त नहीं होगा, तो बाद में आर्थिक निर्भरता की स्थिति बन सकती है।

नियमित समीक्षा सफलता की कुंजी

रिटायरमेंट प्लानिंग एक बार का निर्णय नहीं, बल्कि निरंतर प्रक्रिया है। हर साल अपने निवेश, खर्च और लक्ष्यों की समीक्षा करें। यदि आपकी आय बढ़ती है या जिम्मेदारियां कम होती हैं, तो निवेश की गति बढ़ाएं। पोर्टफोलियो में इक्विटी और डेट का संतुलन उम्र के अनुसार रखें। जैसे-जैसे रिटायरमेंट नजदीक आए, जोखिम कम करते जाएं।

स्पष्ट रणनीति अपनाएं

40 की उम्र में रिटायरमेंट प्लानिंग शुरू करना देर नहीं है, बशर्ते आप अनुशासित और स्पष्ट रणनीति अपनाएं। सही दिशा में उठाया गया कदम आपको आर्थिक स्वतंत्रता और सम्मानजनक जीवन दे सकता है। याद रखें, रिटायरमेंट कोई अंत नहीं, बल्कि जीवन का नया अध्याय है और इसकी तैयारी आज से ही शुरू होती है।

खबर संक्षेप

साइंस एलिमेंट्री सेमिनार का किया आयोजन

जींद। डीएवी शताब्दी पब्लिक स्कूल में अध्यापकों के लिए विशेष साइंस एलिमेंट्री सेमिनार का आयोजन किया गया। यह सेमिनार विद्यालय की प्राचार्या रश्मि विद्यार्थी के सानिध्य एवं मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। सेमिनार में रिसोर्स पर्सन डायरेक्टर एनआईआईएलएम यूनिवर्सिटी कैथल डा. संदीप कुमार और रितु ग्रोवर प्रोफेसर केमिस्ट्री आर्यन इंटरनेशनल स्कूल कैथल एवं डीएवी प्राचार्या रश्मि विद्यार्थी ने दीप प्रज्वलित करके सेमिनार का शुभारंभ किया।

चाणक्य स्कूल में मनाया महाशिवरात्रि का पर्व

उचाना। चाणक्य इंटरनेशनल स्कूल कसूहन में महाशिवरात्रि पर्व मनाया गया। शिवपुराण पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित हुई। प्रधानाचार्य रितु देवी ने भगवान शिव की महिमा का गुणगान करते हुए महाशिवरात्रि के पर्व को लेकर जानकारी दी। दूसरी कक्षा के विद्यार्थियों ने जींद के रानी तालाब स्थित मंदिर में भगवान शिव की पूजा अर्चना की।

सद्भाव यात्रा को मिल रहा जबरदस्त जन समर्थन

उचाना। युवा कांग्रेस नेता विजेंद्र सिंह डूमरखा कलां निरंतर सदभाव यात्रा में पूर्व सांसद एवं कांग्रेस नेता बृजेंद्र सिंह के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहे है। उन्होंने कहा कि हर हलके में यात्रा को जबरदस्त जन समर्थन मिल रहा है। सत्ता में रहने के लिए वोटों की राजनीति करते हुए भाईचारा को भाजपा ने तोड़ा है। भाजपा ने प्रदेश में वोटों की राजनीति के लिए भाईचारा को तोडने का काम किया है।

दो दिवसीय वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम

जींद। सरला मेमोरियल राजकीय कन्या महाविद्यालय सफीदों में दो दिवसीय वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम सरगम का आयोजन प्राचार्य सत्यवान मलिक के मार्गदर्शन में हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता उप प्राचार्य प्रोफेसर सुषमना चोपड़ा द्वारा की गई। पहले दिन सरगम प्रतियोगिता की शुरुआत सरस्वती वंदना एवं दीप प्रज्वलित करके की।

भगवान शिव की महिमा का किया गुणगान

कैथल। शिवाला गणेश तीर्थ रुद्री सभा द्वारा श्री ग्यारह रुद्री शिव मंदिर में आयोजित महाशिवपुराण कथा शनिवार को चौथे दिन भी जारी रही। इस कथा में वृंदावन से पहुंची पंडित दिव्या ने भगवान शिव की महिमा का गुणगान किया। चौथे दिन की कथा के कार्यक्रम की शुरूआत हरियाणा रेडक्रॉस के भूतपूर्व चेयरमैन डॉ. मुकेश ने दीप प्रज्वलित करके की।

मारपीट-अश्लील हरकत करने पर चार नामजद

जींद। सदर थाना सफीदों इलाका गांव में महिला से मारपीट करने तथा अशील हरकत करने पर पुलिस ने ससुर समेत चार लोगों के खिलाफ अशील हरकत समेत विभिन्न भारतीय न्याय संहिता के तहत मामला दर्ज किया है।

कैथल जिले के गांव की एक महिला ने पुलिस को दी शिकायता में बताया कि उसकी शादी सदर थाना सफीदों इलाका गांव में हुई थी। शादी के बाद से अक्सर उसके साथ मारपीट की जाती थी।

विकास रैली का दिया निमंत्रण

जींद। आगामी 18 फरवरी को उचाना में होने वाली सीएम नायब सिंह सैनी की धन्यवाद एवं उचाना विकास रैली में भीड़ जुटाने के लिए भाजपा पदाधिकारी, कार्यकर्ता जुटे है। रैली विधायक देवेंद्र चतरभुज अत्री की अगुवाई में हो रही है। मीटिंग करके निमंत्रण दिया जा रहा है। युवा नेता गौरव अत्री ने कहा कि रैली में युवाओं की रिकॉर्ड भारी होगी। क्योंकि भाजपा ने युवाओं से किया हर वायदा पूरा किया है।

दालमवाला विद्यालय में बच्चों का स्वास्थ्य जांचा

जींद। दालमवाला पब्लिक स्कूल में केसरी फिजियोथेरेपी क्लीनिक एवं पैथोलॉजी लैब के द्वारा दो दिवसीय स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। इसमें स्कूल के सभी बच्चों के स्वास्थ्य की जांच मुफ्त रूप से की गई। यह सेवा बच्चों उनके पेरेंट्स एवं बाहरी व्यक्तियों के लिए भी थी।

राजकीय कालेज में चौथी वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता संपन्न

400 मीटर दौड़ में संजू अव्वल, हिमांशु द्वितीय

विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ राजौंद

राजकीय कालेज में स्पोर्ट्स कमेटी के तत्वावधान में चौथी वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन उत्साहपूर्वक किया । प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लेते खेल प्रतिभा का प्रदर्शन किया। मैदान में जोश, अनुशासन और खेल भावना का संगम देखने को मिला। प्रतियोगिता के अंतर्गत 100, 200 व 400 मीटर दौड़, जैवलिन थ्रो, शॉट पुट, लंबी कूद सहित विभिन्न स्पर्धाएं आयोजित की गईं।

राजौंद। विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित करते। फोटो :हरिभूमि

ये रहे विजेता

लड़को के वर्ग में लंबी कूद में हिमांशु प्रथम, संजू द्वितीय व विवेक तृतीय रहे। 100 मीटर दौड़ में संजू प्रथम, हिमांशु द्वितीय व अमनदीप तृतीय रहे। 400 मीटर दौड़ में संजू प्रथम, हिमांशु द्वितीय व जतिन तृतीय रहे। शॉट पुट में हिमांशु प्रथम, सूरज द्वितीय व नितिन तृतीय रहे तथा जैवलिन थ्रो में सूरज प्रथम, संजू द्वितीय व रमनदीप तृतीय रहे। लड़कियों के वर्ग में लंबी कूद में एकता प्रथम, खुशी द्वितीय व कोमल तृतीय रहीं। शॉट पुट में पूजा प्रथम, एकता द्वितीय व प्रीति तृतीय रहीं। 100 मीटर दौड़ में एकता प्रथम, नीतू द्वितीय व खुशी तृतीय रहीं तथा 200 मीटर दौड़ में एकता प्रथम, नीतू द्वितीय व खुशी तृतीय रहीं। सक्रेस स्पर्धा में कोमल प्रथम, प्रीति द्वितीय व समृद्धि तृतीय रहीं।बॉयज बेस्ट एथलीट का खिताब संयुक्त रूप से हिमांशु व संजू को प्रदान किया गया, जबकि गर्ल्स बेस्ट एथलीट का सम्मान एकता को मिला। विश्वविद्यालय स्तर पर रेसलिंग में दो बार कांस्य पदक विजेता अमनदीप को भी विशेष रूप से सम्मानित किया गया। मंच संचालन रविंद्र कुमार ने किया तथा निर्णायक मंडल में राममेहर एवं अशोक कुमार उपस्थित रहे। अंत में प्राचार्य ने सभी प्रतिभागियों और अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

खेलों को अपनाएं युवा

सभी प्रतियोगिताएं खेल प्रशिक्षक प्रवीण की देखरेख में सम्पन्न हुईं। स्पोर्ट्स कमेटी इंचार्ज विक्रम ने विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में थाना राजौंद के एसएचओ सतपाल शर्मा ने शिरकत की। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. रोहताश नैन ने मुख्य अतिथि को प्रशस्ति पत्र एवं पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मानित किया। मुख्य अतिथि सतपाल शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि विद्यार्थी जीवन में खेलों का विशेष महत्व है। खेलों से शारीरिक और मानसिक विकास होता है तथा टीमवर्क, अनुशासन और नेतृत्व क्षमता का विकास होता है। उन्होंने युवाओं को नशे जैसी बुरी आदतों से दूर रहकर खेलों के माध्यम से अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने का आह्वान किया।

दो दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता में खिलाड़ियों ने दिखाया दमखम

कलायत। श्री कपिल मुनि राजकीय महिला महाविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का उत्साहपूर्वक समापन हुआ। समापन समारोह में प्राचार्य डॉ सुनील गर्ग को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। उन्होंने कहा कि खेलकूद न केवल शारीरिक विकास में सहायक हैं बल्कि मानसिक मजबूती, टीम भावना और नेतृत्व क्षमता को भी विकसित करते हैं। उन्होंने सभी विजेता एवं प्रतिभागी छात्राओं को शुभकामनाएं दीं। खेल कूद प्रभारी नवीन कुमार ने बताया कि उच्चतर शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार छात्राओं की प्रतिभा को निखारने के लिए प्रत्येक वर्ष वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। खेलकूद प्रतियोगिता के दौरान विभिन्न ट्रैक एवं फील्ड के इवेंट आयोजित किए गए जिसमें 200 से अधिक छात्राओं ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। आज प्रतियोगिता के दूसरे दिन 1500 मीटर,100 मीटर, 200 मीटर दौड़ तथा ऊँची व लंबी कूद के इवेंट आयोजित किए गए। बीए प्रथम वर्ष की छात्रा ऋतु ने बेस्ट एथलिट का ख़िताब जीता। प्रत्येक वर्ग में प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को सर्टिफिकेट व नगद पुरस्कार के साथ सम्मानित किया गया। खेल प्रभारी नवीन कुमार ने समस्त टीचिंग व नॉन टीचिंग स्टाफ का धन्यवाद किया। अंत में जन गण मन के साथ कार्यक्रम को समाप्त किया गया।

योग्य युवाओं को मिला रोजगार : सुदेश

केंद्रीय मंत्री के मुख्य मीडिया सलाहकार का किया स्वागत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ ढांड

केंद्रीय मंत्री एवं पूर्व सीएम मनोहर लाल के मुख्य मीडिया सलाहकार सुदेश कटारिया अपने धन्यवादी दौरे के तहत पूंडरी विधानसभा क्षेत्र के गांव-गांव संपर्क अभियान के दौरान गांव जाजनपुर पहुंचे। गांव पहुंचने पर भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व सरपंच कृष श्योकंद तथा अन्य कार्यकर्ताओं ने फूलमालाएं पहनाकर तथा किसानों के मसीहा दीनबंधु सर छोटूराम का चित्र भेंट कर उनका जोरदार स्वागत किया। पत्रकारों से बातचीत में कटारिया ने

कहा कि हरियाणा सरकार द्वारा संत शिरोमणि गुरु रविदास जी महाराज की जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में प्रदेश के कोने-कोने से लोग पहुंचे थे। उन्होंने कहा कि रविदासिया समाज की लंबे समय से मांग थी कि गुरु महाराज का भव्य मंदिर बनाया जाए। पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर के कार्यकाल में कुरुक्षेत्र के पीपली में लगभग पांच एकड़ भूमि देकर भव्य मंदिर एवं स्मारक को मंजूरी दी गई, जिससे समाज की भावना को सम्मान मिला। कटारिया ने कहा कि वर्तमान मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी उसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए गरीब और जरूरतमंद वर्ग के उत्थान के लिए कार्य कर रहे हैं तथा सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रहा है। इस अवसर पर पूर्व सरपंच मिया सिंह, महेंद्र सिंह, ईश्वर सिंह, जवाहरमल, सतबीर गिल, मास्टर योगेंद्र, बलकार गोलन, श्याम लाल, सुरेश कुमार, राय सिंह, मिया राम व पाला राम सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे।

कैथल। हिंदू सम्मेलन को संबोधित करते पदाधिकारी। फोटो :हरिभूमि

बच्चों में संस्कारों की कमी : रमन पुरी

कैथल। हिंदू सामाजिक एकता मंच द्वारा चंदना गेट जिला सैनी भवन कैथल में हिंदू सम्मेलन का आयोजित किया। इसमें मुख्य अतिथि महेंद्र सिंह (राम जी) संत रमन पुरी जी, संत त्रिवेणी दास, संत सुरेश पुरी व मुख्य वक्ता संघ विभाग प्रचारक संजय रहे। रमन पुरी ने कहा कि आज समाज में जो संस्कारों की कमी है। इसका मुख्य कारण माता-पिता का बच्चों में संस्कार के प्रति जागृत करने की कमी आ रही है। जिस प्रकार पहले घर के बड़े अपने बच्चों को अपने पास बिठाकर कहानी सुनाते थे। वे पीपल में जल डालना, गाय की पहली रोटी देकर आना, मंदिर में धार्मिक कार्यक्रमों में लेकर जाना, शादी से पद्धति के अनुसार संस्कार अंकुरित करते थे। मुख्य वक्ता संजय ने कहा कि आज के समय में बच्चों को मोबाइल की बहुत ज्यादा आदत पड़ी है।

डिप्टी स्पीकर ने बाल विवाह मुक्ति रथ को दी हरी झंडी

जींद। विधानसभा के उपाध्यक्ष डा. कृष्ण लाल मिड्ढा ने पीडब्ल्यूडी रेस्ट हाउस से एमडीडी ऑफ इंडिया द्वारा संचालित बाल विवाह मुक्ति रथ को हरी झंडी दिखा कर गहन जागरूकता अभियान के दूसरे चरण के लिए रवाना किया। उन्होंने रथ के हस्ताक्षर बोर्ड पर हस्ताक्षर करके अभियान के प्रति अपना समर्थन भी व्यक्त किया। डा. मिड्ढा ने कहा कि बाल विवाह बहुत बड़ी सामाजिक बुराई है। इसीलिए भारत सरकार ने इसे वर्ष 2030 तक जड़ से मिटाने का संकल्प लिया है। ये संकल्प जल्द ही पूर्ण होगा। सबको अभियान में सहयोग कर हमारी बच्चियों को स्वस्थ एवं सुरक्षित वातावरण देना है। जिला समन्वयक नरेंद्र शर्मा ने बताया कि दूसरे चरण में रथ जींद, नरवाना एवं उचाना शहरों के साथ इन ब्लाक के लगभग 100 गांवों का भ्रमण करके बाल विवाह के विरुद्ध जागरूकता अभियान को तेज करेगा।

क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन

जींद। विद्या भारती द्वारा संचालित गोपाल विद्या मंदिर वमावि में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के तत्वावधान में हैप्पी क्लासरूम विषय पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को कक्षा शिक्षण को अधिक प्रभावी, रोचक एवं विद्यार्थियों के अनुकूल बनाने हेतु आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करना था। कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञ के रूप में पूजा मित्तल एवं श्वेता उपस्थित रही। दोनों विशेषज्ञों ने बताया कि कक्षा को विद्यार्थियों के लिए आकर्षक, संवादात्मक एवं आनंदमय बनाने में रचनात्मक गतिविधियों, सहभागिता आधारित शिक्षण पद्धति तथा सकारात्मक संवाद की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्होंने शिक्षकों को विद्यार्थियों की भावनात्मक आवश्यकताओं को समझते हुए शिक्षण प्रक्रिया को सरल सजीव और प्रेरणादायक बनाने का आह्वान किया।

जींद। नियुक्ति पत्र के साथ छात्राएं। फोटो :हरिभूमि

जींद। कार्यक्रम में भाग लेते हुए। फोटो :हरिभूमि

सरकार ने जारी किया ये आदेश

जींद। हिंदू कन्या कालेज के करियर काउंसलिंग एवं प्लेसमेंट सेल के तत्वावधान में दो दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट ड्राइव का सफल आयोजन किया। कार्यक्रम के अंतर्गत 20 छात्राओं का नौकरी के लिए चयन किया और इन छात्राओं को रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं की व्यावसायिक दक्षताओं का विकास करना तथा उन्हें रोजगार के बेहतर अवसरों के लिए तैयार करना था। प्राचार्या डा. पूनम मोर ने कहा कि कालेज का उद्देश्य केवल शैक्षणिक ज्ञान प्रदान करना नही बल्कि छात्राओं को आत्मनिर्भर और सक्षम नागरिक बनाना है। कार्यक्रम की संयोजिका एवं करियर काउंसलिंग एवं प्लेसमेंट सेल की इंचार्ज डा. सुषमा गर्ग तथा सहसंयोजिका डा. नीलम रानी के कुशल निर्देशन में प्रशिक्षण कार्यक्रम और जॉब फेयर माहाविद्यालय के कैंपस में संपन्न हुआ।

खुशबू ने एशियाई चैंपियनशिप में जीता सोना

जींद। डीएन मॉडल स्कूल के लिए अत्यंत गर्व का विषय है कि विद्यालय की पूर्व छात्रा खुशबू ने एशियाई चैंपियनशिप जो सऊदी अरब में आयोजित हुई में शानदार प्रदर्शन करते स्वर्ण पदक जीतकर देश और प्रदेश का नाम रोशन किया है। खुशबू इससे पूर्व हरियाणा टीम की कप्तान के रूप में भी अपनी नेतृत्व क्षमता का परिचय दे चुकी हैं और हरियाणा का प्रतिनिधित्व करते हुए तीन रजत पदक प्राप्त कर चुकी हैं। खुशबू वर्ष 2028 में आयोजित होने वाले ओलंपिक 2028 में टीम इंडिया का प्रतिनिधित्व करेंगी। जो पूरे देश के लिए गौरव की बात है। आयोजित सम्मान समारोह के दौरान खुशबू को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के निदेशक वीरेंद्र ढिल्लो ने उन्हें बधाई देते हुए कहा कि उनकी उपलब्धि पूरे विद्यालय के लिए प्रेरणादायक है।

जींद। खुशबू को सम्मानित करते हुए। फोटो :हरिभूमि

उचाना। समारोह में सम्मानित प्रतिभागी छात्राएं। फोटो :हरिभूमि

प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन

उचाना। गुरुकुल खेड़ा गांव स्थित कन्या गुरुकुल में प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। मुख्यातिथि के तौर पर उचाना एसडीएम दलजीत सिंह ने शिरकत की। विशिष्ट अतिथि के तौर पर एचसीएमएस के प्रदेश महासचिव डा. विजेंद्र ढांडा, समाजसेवी दिलबाग संडील भी मौजूद रहे। गुरूकुल की प्रतिभावान छात्राओं का पुरस्कृत भी किया गया। दलजीत सिंह ने कहा कि आज लड़कियां किसी भी क्षेत्र में लड़कों से पीछे नहीं हैं। कहा कि लड़के के शिक्षित होने से एक परिवार का भविष्य संवरता है और लड़की के शिक्षित होने से दो परिवारों का भविष्य संवरता है। इसलिए हमें लड़कियों की शिक्षा पर विशेष जोर देना चाहिए। यहां पर स्वामी गौरक्षानंद महाराज द्वारा नारी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कन्या गुरूकुल के रूप में जो पौधा लगाया था आज वो वट वृक्ष बन चका है।

जींद। बैठक में भाग लेते पेंशनर्स। फोटो :हरिभूमि

मेडिकल भत्ता तीन हजार किया जाए

जींद। हरियाणा पुलिस कर्मचारी एसोसिएशन की बैठक पुलिस लाइन में पुलिस कर्मचारी एसोसिएशन की बेठक प्रेम सिंह बांगड की अध्यक्षता में की गई। बैठक में पुलिस व अन्य सहशस्त्र बलों के डयूटी के दौरान हुए पुलवामा हमला में हुए शहीदों व सूरजकुंड मेले मे जगदीश इंस्पेक्टर लोगों की जान बचानते हुए शहीद हुए बलिदानियों को दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई। उन्होंने मांग की कि पुरानी पेंशन लागू की जाए। सरकार द्वारा कैशलेस मेडिकल सुविधा का पत्र जारी करके अमलीजामा दिया जाए ताकि सरकार द्वारा की गई घोषणाएं सिर्फ घोषणाएं न रह जाए। पेंशनरों की उम्र 65-70-75 होने पर 10-15-20 प्रतिशत की बढ़ोतरी की जाए जैसा कि अन्य राज्यों मे लागू है। मेडिकल भत्ता एक हजार से बढा कर तीन हजार करने की मांग उठाई।

महाराजा सूरजमल का बलिदान पूरे देश के लिए प्रेरणास्त्रोत : मोर

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जींद

महाराज सूरजमल की 319वीं जयंती पर शुक्रवार को जाट धर्मशाला जींद में रक्तदान शिविर का आयोजन किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि नगर परिषद चेयरपर्सन डा. अनुराधा सैनी रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता जाट धर्मशाला प्रधान फूलकुमार मोर ने की। इस दौरान महिला थाना प्रभारी मोनिका को सभा की तरफ से सम्मानित किया। शिविर में 50 युवाओं ने रक्तदान किया। वक्ताओं ने बताया कि भरतपुर राज्य के संस्थापक महाराजा सूरजमल ने

महाराजा सूरजमल को पुष्प अर्पित करते नप अध्यक्षा डा. अनुराधा सैनी।

धर्म और मातृभूमि की रक्षा के लिए मुगल शासकों के विरुद्ध अनेक युद्ध लड़े। वे एक कुशल रणनीतिकार, पराक्रमी योद्धा और प्रजावत्सल शासक थे। उनका बलिदान आज भी इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। जाट धर्मशाला प्रधान फूल कुमार मोर ने कहा कि महाराजा सूरजमल का बलिदान पूरे देश के लिए प्रेरणास्त्रोत है। उन्होंने अपने जीवन में लगभग 80 युद्ध लड़े और कभी पराजित नहीं हुए। उनका जीवन संघर्ष, साहस और स्वाभिमान का प्रतीक रहा है। मोर ने आने वाली पीढ़ियों को उनके आदर्शों से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। इस अवसर पर सभा के उपप्रधान किताब सिंह बनवाला, कोषाध्यक्ष डा. बलवंत सिंह, कोषाध्यक्ष यादवेंद्र खर्ब, सदस्य शिशपाल लोहान, एडवोकेट वीरेंद्र लाठर, कुलदीप मलिक, सुमनलता आर्य मौजूद थे।

पीडब्लयूडी विश्राम गृह में लोगों से रूबरू होते विधायक देवेंद्र चतरभुज अत्री।

विधायक ने रैली स्थल का लिया जायजा

उचाना। हाइवे स्थिति उचाना की अतिरिक्त अनाज मंडी में 18 फरवरी को सीएम नायब सिंह सैनी धन्यवाद एवं उचाना विकास रैली को संबोधित करने आ रहे है। रैली के आयोजक विधायक देवेंद्र चतरभुज अत्री रैली को सफल बनाने के लिए कमान संभाले है। रैली की तैयारियों का जायजा लेने वाले रैली स्थल पर भी पहुंचे। वो मीटिंग कर रहे है तो सरपंचों, सामाजिक संगठनों, व्यापारियों, युवाओं के साथ आमजन से सुझाव जो मांग पत्र तैयार होगा उसको लेकर मांग रहे है। प्रशासन पूरी तैयारियों में जुटा है। साफ.-सफाई साथ अन्य सुविधाओं का प्रबंधन किया जा रहा है। प्रशासनिक अधिकारी दौरे निरंतर कर रहे है। पत्रकार वार्ता में विधायक दावा किया कि ये दिन उचाना के लिए ऐतिहासिक दिन होगा। ये रैली इतिहास बनाने का काम करेगी ये पूरा विश्वास है।

एमडीएन ग्लोबल स्कूल में शिक्षा, संस्कार और सृजनात्मकता का भव्य उत्सव

विद्यार्थियों ने रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कैथल

एमडीएन ग्लोबल स्कूल कैथल में 'ज्ञानोत्सव 2026 - ए सेलिब्रेशन ऑफ लर्निंग' का भव्य एवं गरिमामय आयोजन अत्यंत उत्साह और उल्लास के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन, सरस्वती पूजन, सरस्वती वंदना तथा राष्ट्रध्वज फहराकर किया गया। इस पावन अवसर पर विद्यालय के निदेशक डॉ. विनोद कुमार, चेयरपर्सन निधि कंसल, प्रबंधक गौरव गर्ग, साधना गर्ग एवं प्राचार्य डॉ. संत कौशिक की गरिमामयी

कैथल। एमडीएन ग्लोबल स्कूल कैथल में कार्यक्रम का शुभारंभ करते पदाधिकारी

उपस्थिति ने समारोह की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों, अभिभावकों एवं आगंतुकों का विद्यार्थियों द्वारा तिलक लगाकर, बैज पहनाकर तथा मधुर स्वागत गीत प्रस्तुत कर आत्मीय अभिनंदन किया गया। प्राथमिक विंग के नन्हे-मुन्ने विद्यार्थियों ने रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति की समृद्ध परंपरा, एकता, विविधता और नैतिक मूल्यों का सजीव चित्रण प्रस्तुत कर समारोह में चार चांद लगा दिए। इसके उपरांत 'ज्ञानोत्सव' नाम से आयोजित भव्य शैक्षिक प्रदर्शनी का शुभारंभ किया गया, जिसमें अभिभावकों, आगंतुकों एवं मीडिया प्रतिनिधियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विद्यालय के लगभग 705 विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों के कुल 503 मॉडलों का प्रदर्शन किया। इन मॉडलों में कंप्यूटर साइंस, विज्ञान, अंग्रेजी, गणित, हिंदी, सामाजिक विज्ञान, संस्कृत, पंजाबी, वाणिज्य, कला एवं शिल्प तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे आधुनिक विषयों को समाहित किया गया था। प्रत्येक विद्यार्थी ने अपने मॉडल का आत्मविश्वासपूर्वक प्रस्तुतीकरण करते उसके उद्देश्य, कार्यप्रणाली एवं उपयोगिता के बारे में विस्तार से जानकारी दी। विद्यार्थियों की संवाद शैली, विषय ज्ञान एवं प्रस्तुति कौशल ने सभी अभिभावकों और आगंतुकों को अत्यंत प्रभावित किया। विद्यालय के निदेशक डॉ. विनोद कुमार ने अपने संबोधन में अभिभावकों को विद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धियों, नवीन शिक्षण पद्धतियों तथा भावी योजनाओं से अवगत कराया।

कैथल। राजकीय स्कूल सोंगल के विद्यार्थियों को संबोधित करते कृष्ण प्रजापति।

कम्युनिकेशन स्किल्स अत्यंत आवश्यक

कैथल। पीएम श्री रावमावि सौंगल में विद्यार्थियों के लिए एक विशेष जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें युवा पत्रकार कृष्ण प्रजापति ने छात्र-छात्राओं से रूबरू होकर वर्तमान समय में मीडिया की भूमिका पर विस्तार से चर्चा की। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने विद्यार्थियों को बताया कि आज के डिजिटल दौर में मीडिया का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव के कारण सूचना का प्रवाह पहले से अधिक तेज और व्यापक हो गया है। उन्होंने मीडिया के प्रकारों, उसकी जिम्मेदारियों और समाज में उसकी सकारात्मक भूमिका पर प्रकाश डाला। कृष्ण ने कहा कि आज के समय में युवाओं के लिए कम्युनिकेशन स्किल्स अत्यंत आवश्यक हैं। प्रभावी संवाद क्षमता न केवल शैक्षणिक जीवन में बल्कि भविष्य के करियर निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

खबर संक्षेप

स्वयं सेवकों ने चलाया स्वच्छता अभियान

कैथल। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कमेटी चौक कैथल में एनएसएस के तत्वावधान में एक दिवसीय विशेष कैंप का आयोजन किया गया। कैंप का मुख्य विषय "नशा मुक्ति एवं एक पेड़ मां के नाम" रहा, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों को सामाजिक सरोकार और पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। एनएसएस के कार्यक्रम अधिकारी ईशवर ढांडा ने बताया कि आज के कैम्प का आयोजन एनएसएस ईकाई द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रधानाचार्य रविन्द्र शर्मा रहे। उनके साथ प्राध्यापक अमरीक सिंह व राजेंद्र सिंह सुरेंद्र मलिक प्रविन मलिक उपस्थित रहे।

एक गोत्र-एक गांव में विवाह पर रोक की मांग

राजौद। एक गोत्र-एक गांव में विवाह पर रोक लगाने की मांग को लेकर सर्व समाज के लोगों की बैठक महेंद्र बालू के निवास पर आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता सुभाष बड़सिकरी ने की। बैठक में समाज से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई तथा सामाजिक एकता और सुधार पर बल दिया गया।इस दौरान सर्व समाज के खाप प्रवक्ता सुबे सिंह ने कहा कि एक गोत्र और एक गांव व साथ लगते गांव में विवाह पर रोक समाज की परंपराओं और मर्यादाओं के अनुरूप होनी चाहिए।

क्रेडिट कार्ड से की 103400 रुपये की ठगी

कैथल। क्रेडिट कार्ड से प्रोटक्शन प्लान हटवाने का झांसा देकर अज्ञात आरोपी ने एक युवक से 103400 रुपये की ठगी कर ली। आरोपी ने युवक को व्हाट्सएप पर एक लिंक भेजा, जिस पर क्रेडिट कार्ड की डिटेल भरते ही उसके खाते से पैसे कट गए। सीवन के देवेंद्र मिड्ढा ने साइबर थाना में दी शिकायत में बताया कि 9 मई 2025 को उसके पास एक अज्ञात व्यक्ति का फोन आया। कॉल करने वाले ने कहा कि उसके क्रेडिट कार्ड पर प्रोटक्शन प्लान सक्रिय है, जिसके लिए सालाना शुल्क देना पड़ता है। आरोपी ने भरोसा दिलाया कि यदि वह प्लान हटवा लेता है तो उसे कोई नुकसान नहीं होगा।

नरेश पबनावा ने की हादसे पीडित की आर्थिक सहायता

ढांड। गांव पबनावा के समाजसेवी एवं वार्ड-13 से जिला परिषद के भावी उम्मीदवार नरेश पबनावा ने मानवता का परिचय देते हुए हादसे से पीड़ित बलजीत सिंह निवासी पबनावा के परिवार की आर्थिक सहायता की। ऑस्ट्रिया में रह रहे नरेश पबनावा ने अपनी नेक कमाई से 11 हजार रुपये का चेक अपने बड़े भाई कृष्ण कुमार बोदला व बलिन्दर बोदला के माध्यम से परिवार तक भिजवाया।

बता दें कि हादसे के कारण परिवार आर्थिक संकट से गुजर रहा था। सूचना मिलने पर नरेश पबनावा ने तुरंत सहयोग राशि भेजकर सहायता प्रदान की।

रामफल बने किसान कांग्रेस के हलकाध्यक्ष

कैथल। रामफल नौच को हरियाणा किसान कांग्रेस में कैथल हलका अध्यक्ष के पद पर नियुक्त किय गया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस महासचिव एवं सांसद रणदीप सिंह सुरजेवाला व किसान कांग्रेस जिलाध्यक्ष जोरा सिंह सिनंद ने रामफल नौच को नियुक्ति पत्र प्रदान किया और शुभकामनाएं दी। रामफल नौच लंबे समय से कैथल जिले में कांग्रेस पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ता रहे हैं।

शिव शंकर कमेटी का भंडारा आज

सीवन। त्रयोदशी व महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर शिव शंकर मासिक त्रयोदशी भंडारा कमेटी द्वारा 15 फरवरी को 72वें भंडारे का आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन कैथल-पटियाला मुख्य मार्ग पर अशोक रेडियो के समीप श्रद्धा व सेवा भाव के साथ संपन्न होगा।

14 फरवरी 2019 को पाकिस्तानी आंतकी संगठन ने भारतीय सैनिकों पर पुलगांवा में किया था हमला

पुलवामा के शहीदों को पूर्व सैनिकों ने दी श्रद्धांजलि

पूर्व सैनिक वेलफेयर एसोसिएशन कैथल ने भी हरियाणा शहीद स्मारक पार्क रोड कैथल में अपने शहीदों के बलिदान को याद किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कैथल

14 फरवरी 2019 का दिन सेना व अर्ध सैनिक बल के लिए ही नहीं पूरे देश के लिए एक काला दिवस है जिसमें हमारे अर्ध सैनिक बलों के 40 अमर वीर योद्धा को जसे मोहम्मद आतंकी संगठन ने षड्यंत्रकारी तरीके से जम्मू से श्रीनगर कानवाई में जाते समय अंतकीपुर पुलगांवा में शहीद किया। इस लिए इस दिन को देशवासी काला दिवस के नाम से मानते हैं। उसी कड़ी में पूर्व सैनिक वेलफेयर एसोसिएशन कैथल ने भी हरियाणा शहीद स्मारक पार्क रोड कैथल में अपने शहीदों के बलिदान को याद किया और उनकी वरषी पर भाव भिन्न श्रद्धांजलि दी गई। इस मौके पर वायु, नौ, व थल के साथ अर्धसैनिक बलों के पूर्व सैनिकों ने भी बड़ी संख्या में आकर श्रद्धांजलि दी। इस मौके पर सिपाही सोहन लाल 56 इंजीनियर रेजीमेंट,गांव क्योड़क को 80 वर्ष की आयु होने पर एसोसिएशन का स्मृति चिन्ह भेंट करके सम्मानित किया। इस मौके पर एयरफोर्स प्रधान एच एफ ओ भीम सिंह गिल, एच एफ ओ महेंद्र सिंह राजराणा, लेफ्टिनेंट मेघ सिंह राणा, कैप्टन मुख्तार सिंह जांगड़ा, सुबेदार मेजर रामफल चहल, सुबेदार बलबीर सिंह,हवलदार रामस्वरूप, सूबेदार बलबीर सिंह ,इंस्पेक्टर सोम दत्त शर्मा ,सूबेदार ज्योति राम,कैप्टन बलजीत मोर ,सूबेदार मेजर विजय शर्मा, इन्स्पेक्टर सुरेश ने श्रद्धांजलि दी।

कैथल। शहीदों को श्रद्धांजलि देते पूर्व सैनिक

24 फरवरी को लगेगा पेंशन शिविर

यहां पर एसोसिएशन प्रधान जगजीत फौजी ने सभी को जानकारी देते हुए यह भी बताया कि अंबाला वेटरनस सहायता केंद्र अंबाला कैंट की टीम 24 फरवरी को नई अनाज मंडी के मार्केट कमेटी कार्यालय चीका, नजदीक उधम सिंह चौक में 10:00 बजे स्पर्श पेंशन शिविर लगायेंगी। इससे कि हमारे सब डिविजन गुहला के पूर्व सैनिक परिवारों व शहीद परिवारों को अपनी स्पर्श पेंशन की त्रुटियां ठीक करवाने का मौका मिलेगा। उपस्थित साथियों ने कैथल में भारत माता का मंदिर बनाने की भी बात हुई। इस बारे में भी विचार विमर्श किया जिसको की मार्च मास की मीटिंग ये भी एजेंडा रखा जाएगा। मुख्य अतिथि सार्जेंट लाजपत राय के सामने सभी सीनियर साथियों ने अपने-अपने विचार रखें और श्रद्धांजलि दी। मुख्य अतिथि ने कहा कि सरकार कर्मचारियों और पेंशनर्स के अधिकारों का हनन कर रही है। कर्मचारी व पेंशनर्स देश की रीड़ की हड्डी है। देश के विकास में इनका अहम योगदान है।

जुलाना। ईडन गार्डन स्कूल में शहीदों के नारे लगाते छात्र।

छात्रों ने पुलवामा के शहीदों को किया नमन

जुलाना। जुलाना क्षेत्र के करसोला गांव स्थित ईडन गार्डन स्कूल में पुलवामा हमले के शहीदों की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय के छात्र, छात्राओं, अध्यापकों एवं स्टाफ सदस्यों ने भाग लेकर शहीदों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम की शुरुआत दो मिनट के मौन के साथ की गई। डायरेक्टर सुनीता अहलावत ने अपने संबोधन में कहा कि देश के वीर सैनिक अपने परिवार और व्यक्तिगत सुख व सुविधाओं की चिंता किए बिना राष्ट्र की सुरक्षा के लिए प्राणों का बलिदान दे देते हैं। शहीद हुए जवानों का त्याग देशवासियों को प्रेरणा देता है।

स्वास्थ्य जांच शिविर में 150 लोगों की हुई जांच

जुलाना । जुलाना क्षेत्र के नंदगढ़ गांव में पुलवामा हमले में शहीद हुए वीर जवानों की स्मृति में श्रद्धांजलि स्वरूप रक्तदान शिविर एवं निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य शहीदों के प्रति सम्मान प्रकट करना और समाज सेवा के माध्यम से उनके बलिदान को याद रखना रहा। कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में जिला परिषद चेयरपर्सन प्रतिनिधि कुलदीप रंधावा ने शिरकत की। शिविर में इंडियन वेटरनस ऑगेनाइजेशन जींद के सदस्यों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया और ग्रामीणों को देशभक्ति एवं सामाजिक जिम्मेदारी का संदेश दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ शहीदों के चित्रों पर पुष्पांजलि अर्पित कर दो मिनट का मौन रखकर किया गया। इसके बाद रक्तदान शिविर में 50 युवाओं और ग्रामीणों ने उत्साहपूर्वक रक्तदान किया। स्वास्थ्य जांच शिविर में चिकित्सकों की टीम ने 150 ग्रामीणों की सामान्य स्वास्थ्य जांच, रक्तचाप, शुगर तथा अन्य आवश्यक परीक्षण किए। इस मौके पर समाजसेवी सुभाष ढिगाना, नरेंद्र लाठर, विरेंद्र, राजेंद्र रेढू, अमरनाथ, रमेश जागलान, बलवान सिंह, रामकिशन आदि मौजूद रहे।

शहीदों की स्मृति में बिनैन खाप के चबूतरे पर लगाया रक्तदान शिविर

नरवाना । पुलवामा में हुए आतंकी हमले में शहीद हुए वीर जवानों की पावन स्मृति में सर्वजातीय बिनैन खाप के चबूतरे पर शनिवार को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। रक्त एकत्रिक करने के लिए मेट्रो ब्लड बैंक जींद की टीम द्वारा 83 यूनिट एकत्रित किया गया व इस मौके पर रक्तदाताओं को एक हेलमेट सम्मान के रूप में भेंट किए। कार्यक्रम का उद्देश्य शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करना तथा समाज में सेवा और मानवता का संदेश देना रहा। यह रक्तदान शिविर डा. मनजीत नैन व समस्त ग्रामवासियों के सहयोग से लगाया गया। जिसमें युवाओं ने बढ़.चढ़कर भाग लिया। बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने स्वेच्छा से रक्तदान कर समाज सेवा की मिसाल पेश की। इस अवसर पर खाप प्रवक्ता संदीप दनौदा ने सबसे पहले रक्तदान कर शिविर की शुरुआत की। उन्होंने कहा कि पुलवामा के शहीदों का बलिदान देश कभी नहीं भूल सकता और रक्तदान जैसे कार्य उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। खाप प्रधान रघुवीर नैन ने कहा कि रक्तदान महादान है और यह कार्य अत्यंत सराहनीय है। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोगों ने शहीदों की याद में दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की। इस मौके पर अमित नैन, गुरदेव, जयभगवान, किताब सिंह आदि मौजूद रहे।

कैथल। महाराजा सूरजमल की प्रतिमा पर पुष्पार्पित करते जाट समाज के लोग।

जाट समाज ने महाराजा सूरजमल को किया याद

कैथल। जाट समाज के लोगों द्वारा शनिवार को कैथल के तितरम मोड पर महाराजा सूरजमल को याद किया गया। जाट नेता केसा राम प्योढ़ा ने बताया कि इस अवसर पर उन्होंने कहा कि महाराजा सूरजमल एक महान शासक, कुशल रणनीतिकार व वीर योद्धा थे। उन्होंने अपने जीवन काल में लगभग 80 युद्ध लड़े व सभी में विजय प्राप्त की। वह एक कुशल प्रशासक भी थे उन्होंने किसानों, व्यापारियों के लिए सुव्यवस्थित शासन व्यवस्था लागू की। जगमग ने कहा कि हमें उनके आदर्शो को अपना कर निरंतर उनके सपनों को साकार करने की दिशा में काम करना चाहिए। लोगों ने बताया कि यहां पर महाराजा सूरजमल चौक बनाया जाएगा। इस अवसर पर बिल्लू चंदाना, जगमग मटौर, रोशन पाडला, रामनिवास प्योढ़ा, मोनू बरटा, जिला पार्षद दीप बालू, जगरूप ढुल मौजूद रहे।

दिव्यांग कर्मचारियों की सेवा आयु 60 वर्ष तक बहाल करने की मांग

- भाजपा मुख्यालय में मुख्यमंत्री के नाम सौंपा ज्ञापन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जींद

दिव्यांग कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति आयु 60 वर्ष पुनः बहाल किए जाने की मांग को लेकर विकलांग संघ उमंग सिरसा की जींद शाखा द्वारा भाजपा मुख्यालय में आयोजित कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री हरियाणा के नाम ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन मुख्यमंत्री हरियाणा के ओएसडी भारत भूषण भारती को सौंपा गया। इस अवसर पर भाजपा के जिला अध्यक्ष तेजेंद्र सिंह ढुल सहित अनेक भाजपा पदाधिकारी उपस्थित थे। ज्ञापन में उल्लेख किया गया कि हरियाणा सरकार के वित्त विभाग द्वारा दिनांक तीन फरवरी 2026 को जारी गजट अधिसूचना के माध्यम से हरियाणा सिविल सेवा सामान्य नियम 2016 के नियम 143 में संशोधन कर 70 प्रतिशत अथवा उससे अधिक दिव्यांगता वाले कर्मचारियों को पूर्व में प्रदान की गई 60 वर्ष की सेवानिवृत्ति आयु संबंधी व्यवस्था समाप्त कर दी गई है।

जींद। ज्ञापन सौंपते हुए संघ पदाधिकारी। फोटो : हरिभूमि

कैथल। नवनियुक्त कांग्रेस जिला उपाध्यक्ष सुनील कुंडू।

सुनील कुंडू बने जिला कांग्रेस कमेटी के उपप्रधान

राजौद। कांग्रेस पार्टी हाईकमान द्वारा सुनील कुंडू को जिला कांग्रेस कमेटी का उपप्रधान नियुक्त किए जाने पर पार्टी कार्यकर्ताओं में उत्साह का माहौल है। समर्थकों ने कांग्रेस हाईकमान का आभार प्रकट करते हुए कहा कि पार्टी ने एक समर्पित, कर्मठ और जमीनी स्तर से जुड़े नेता को यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी है। उन्होंने कहा कि सुनील कुंडू लंबे समय से संगठन के लिए सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं और उन्होंने हर परिस्थिति में पार्टी की नीतियों को मजबूती से जनता तक पहुंचाने का कार्य किया है। उनके नेतृत्व में जिला कांग्रेस संगठन और अधिक सशक्त होगा तथा पार्टी को जमीनी स्तर पर नई ऊर्जा मिलेगी।उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि कुंडू के मार्गदर्शन में पार्टी कार्यकर्ता एकजुट होकर संगठन को मजबूत करेंगे और चुनावों में कांग्रेस को सफलता दिलाने के लिए पूरी निष्ठा से कार्य करेंगे।

कैथल। हिंदू महासम्मेलन का न्योता देते पदाधिकारी

हिंदू सम्मेलन के लिए जनसम्पर्क अभियान शुरू

कैथल। नगर के सेक्टर 19 में आने वाली 22 फरवरी रविवार को होने वाले हिंदू महा सम्मेलन के सफल आयोजन के लिए आयोजन समिति के पदाधिकारीयों ने जनसम्पर्क अभियान का शुभारम्भ श्री महंत रमन पुरी जी महाराज एवं श्री महंत रूद्र पुरी जी महाराज को आमंत्रित करके किया। पुजनीय मंहत इस कार्यक्रम में उपस्थितजनों को विशेष आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित रहेंगे एवं धार्मिक विधान के साथ हवन यज्ञ पूर्ण करवाऐंगे। इसके बाद सांस्कृतिक गतिविधियों, प्रवचनों एवं भंडारे का आयोजन भी किया जा रहा है। इन गतिविधियों के नियोजन एवं सफल आयोजन करने के लिए विभिन्न सदस्यों की ड्यूटीयां लगाई गई हैं। मुख्य वक्तव्य राधेश्याम जी का होगा। प्रसिद्ध भजन गायक रामनिवास आर्य समाज एवं राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत रचनाओं को प्रस्तुत करेंगे ।

आधारशिला में हुआ विदाई समारोह का आयोजन

जींद ।आधारशिला विद्यालय में 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए विदाई समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के दौरान स्कूल पहुंचे विद्यार्थियों का स्वागत पुष्प वर्षा एवं तिलक लगा कर किया गया। उसके बाद दीप प्रज्जवलन कर मां सरस्वती के आशीर्वाद उपरांत कार्यक्रम शुरू हुआ। इसमें बच्चों ने विभिन्न प्रस्तुतियों के माध्यम से अपने अध्यापकों के प्रति अपनी भावनाओं को प्रकट किया। रंग बिरंगे परिधानों से सजे छात्रों की चहल-पहल से पूरा स्कूल परिसर शोभायमान लग रहा था। 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों ने सभी जूनियरों को हमेशा अनुशासन व नैतिक मूल्यों का पालन करने का संदेश दिया। उन्होंने नृत्य, शायरी, कविता व गीतों के माध्यम से अपना प्रेम अभिव्यक्त किया।

जींद। कार्यक्रम में भाग लेते हुए छात्र। फोटो : हरिभूमि

एनआइआइएलएम विवि की तीन छात्राओं ने ताइक्वांडो में जीता रजत

- बीएससी की छात्रा भारती ने चैंपियनशिप में जीता रजत पदक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कैथल

द एनआईआई एल एम विश्वविद्यालय कैथल के लिए अत्यंत गौरव का विषय बनते हुए विश्वविद्यालय की तीन छात्राओं ने राज्य स्तरीय ताइक्वांडो चैंपियनशिप में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर पदक जीतकर विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया।

बी.एससी. स्पोर्ट्स पाँचवें सेमेस्टर की छात्रा भारती ने कांस्य पदक, बी.एससी. स्पोर्ट्स द्वितीय सेमेस्टर की छात्रा अंजलि ने रजत पदक तथा बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर (योग) की छात्रा आरती ने कांस्य पदक प्राप्त कर उल्लेखनीय सफलता हासिल की। इस उपलब्धि से विश्वविद्यालय परिसर में खुशी की लहर दौड़ गई।

विश्वविद्यालय परिसर में तीनों खिलाड़ियों के आगमन पर उनका भव्य स्वागत किया गया और विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा उन्हें स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।छात्राओं ने तालियों के साथ उनका अभिनंदन किया।

कैथल। मैडल जीतकर आए खिलाडियों को सम्मानित करते पदाधिकारी

नरवाना बस स्टैंड से सुबह सात बजकर 50 मिनट पर चलेगी बस

नरवाना से गुरुग्राम के लिए शुरू हुई एसी बस सेवा

एसी बस में नरवाना से गुरुग्राम का 330 रुपये होगा किराया, 204 किलोमीटर है कुल दूरी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जींद

नरवाना से गुरुग्राम के लिए सुबह सात बजकर 50 मिनट पर एसी बस शुरू की गई है। एसी बस में नरवाना से गुरुग्राम का किराया 330 रुपये है। जबकि साधारण रोडवेज बस में किराया 215 रुपये है। नरवाना से गुरुग्राम की दूरी 204 किलोमीटर है। बस नरवाना से वाया जींद, बादली होकर गुरुग्राम पहुंचती है। इसका फायदा जींद के यात्रियों को भी होगा। ऐसे में यह बस चलने से यात्रियों को बेहतर परिवहन सुविधा मिल पाएगी। जींद डिपो में 10 एसी बस हैं। इसमें से आठ बस जींद मुख्यालय व एक-एक बस नरवाना व सफीदों उपकेंद्र में है। सफीदों वाली बस को दिल्ली रूट पर चलाया जा रहा है। जींद से सिरसा के लिए बस चलती है। वहीं चंडीगढ़ के लिए एसी बस सुबह नौ बजकर 20 मिनट, सुबह 10 बजकर 50 मिनट, दोपहर 12 बजे और दोपहर दो बजकर 20 मिनट पर चलती है। इसके अलावा गुरुग्राम रूट पर सुबह सात बजकर 50 मिनट परए दूसरी बस 11 बज कर 20 मिनट और दोपहर 12 बजकर 40 मिनट पर गुरुग्राम के लिए एसी रवाना होती है। एसी बस में जींद से चंडीगढ़ का किराया 340 रुपये, जींद से गुरुग्राम का किराया 251 रुपये लगता है। जींद डिपो में लगभग 170 साधारण बसें हैं। पहले डिपो में एसी बस नहीं थी। जींद से चंडीगढ़, दिल्ली, गुरुग्राम के अलावा हरिद्वार, रिषिकेश, देहरादून, पांवटा साहिब, सालासर, बालाजी, अमृतसर और लुधियाना रूटों पर भी साधारण बसें ही जा रही हैं।

जींद। बस अड्डा पर मौजूद यात्री।

यात्रियों को बेहतर परिवहन सुविधा देने का प्रयास

बस अड्डा नरवाना के डीआई जसमेर ने बताया कि यात्रियों की मांग पर एसी बस को गुरुग्राम रूट पर चलाया जा गया है। डिपो का प्रयास है कि यात्रियों को बेहतर परिवहन सुविधा दी जा सके। नरवाना से गुरुग्राम के लिए एसी बस शुरु की गई है। यह पहले चंडीगढ़ रूट पर चलती थी।

कैथल। जाट शाइनिंग स्टार स्कूल में अपनी माताओं का पूजन करती छात्राएं।

छात्राओं ने गुरुजनों व माता-पिता को किया नमन

कैथल। आधुनिकता की दौड़ में अपनी संस्कृति और संस्कारों को सहेजने का अनूठा उदाहरण आज जाट शाइनिंग स्टार पब्लिक स्कूल में देखने को मिला। विद्यालय प्रांगण में आयोजित 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' के दौरान उस समय माहौल अत्यंत भावुक और श्रद्धापूर्ण हो गया, जब नन्हे-मुन्ने बच्चों ने पूरे विधि-विधान के साथ अपने माता-पिता और गुरुजनों की आरती उतारी और उनके चरणों में शीश नवाकर आशीर्वाद लिया। इस दृश्य को देखकर उपस्थित अभिभावकों की आँखें छलक आईं। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे आचार्य दर्शन शास्त्री जी (वेदांत दर्शन के प्रखर ज्ञाता) ने अपनी ओजस्वी वाणी और शास्त्रोक्त मंत्रोच्चारण से पूरे वातावरण इस अवसर पर जाट हाई स्कूल समिति के प्रधान राजकुमार बेनीवाल, उपप्रधान बलजिंदर बनवाला, सचिव एडवोकेट रश्मि ढुल और कोषाध्यक्ष बलकार नैन, जसवीर, सत्यवान माजरा, राजपाल, सन्नी आदि मौजूद रहे।

हरिभूमि रविवार भारती

haribhoomi.com

छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित

रोहतक, रविवार 15 फरवरी 2026

तेज रफ्तार से थका मन चाहे सुकून भरी स्लो लाइफ

पिछली एक सदी में तकनीकी विकास में क्रांति के साथ ही लोगों की जीवनशैली भी बहुत तेज रफ्तार वाली हो गई थी। लेकिन कोविड के बाद से लोगों की सोच बदलने लगी और जल्दी से सब कुछ पा लेने के बजाय जीवन में सुकून को तरजीह देने लगे हैं। यही वजह है कि पूरी दुनिया में अब लोग तेज रफ्तार से ऊबकर स्लो लाइफ की तरफ धीरे-धीरे बढ़ रहे हैं।

कवर स्टोरी
लोकमित्र गौतम

एक समय तक 'तेज रफ्तार' होना, रोमांच का सबब माना जाता था, कामयाबी की निशानी थी। इसलिए अधिकांश लोग तेज-तेज और तेज की तरफ पिछली लगभग एक सदी से दौड़ते रहे हैं। इस भागम-भाग में वाकई इंसान ने अपनी जिंदगी की रफ्तार बहुत तेज कर ली। फास्ट इंटरनेट, बुलेट ट्रेन, आवाज की गति से उड़ते हवाई जहाज, इंस्टेंट अपडेट और कुछ महीने या साल में ही करियर की बुलंदी छूना, ये सब इसी तेज रफ्तार के उदाहरण हैं। लेकिन बीते कुछ समय से अब अधिकतर इंसान इस तेज रफ्तार जिंदगी को रोमांच की बजाय आफत का सबब मानने लगे हैं। यही कारण है कि अब दुनिया, तेज रफ्तारी से रोमांचित नहीं है बल्कि स्लो लाइफ की तरकीबें खोज रही है। अमेरिका से लेकर अफ्रीका तक आज स्लो लाइफ न्यू लाइफस्टाइल बन रही है, क्योंकि लोग मशीन बनने से थक चुके हैं, अब वे थोड़ा ठहरकर जीना चाहते हैं।

क्यों लौट रहे हैं धीमे की ओर: पूरी दुनिया में लोग स्लो लाइफ की तरफ लौट रहे हैं, तो इसकी वजह है कि पिछले कई दशकों के भागम-भाग के कारण परिवार की संरचना कमजोर होती जा रही है। फोन आपको किसी क्षण बेफिक्र नहीं होने देता, फुर्सत में नहीं रहने देता। नए-नए रेडीमेड पकवानों की कुछ मिनटों में सप्लाई ऐसे होने लगी है कि लोग अपने स्वाद का स्थाई सुख ही भूल गए हैं। नींद अब दुनिया की सबसे बड़ी नियामत बन चुकी है और सबसे बड़ी बात यह है कि इंसान खुद को ही भूलने लगा है। यही वजह है कि अब अमेरिका हो या एशिया, अफ्रीका और यूरोपीय देश के लोग परिवार के साथ समय बिताना चाहते हैं। कुछ घंटे या हफ्ते में एक दिन कम से कम बिना फोन के रहना चाहते हैं। कभी आराम से धीरे-धीरे पकाकर अपनी मनपसंद डिश खाना चाहते हैं और चाहते हैं कि कम से कम हफ्ते का एक दिन तो ऐसा हो, जब सोकर जगने का टाइमर सेट न हो। इस सबके बीच लोग अब अपने साथ भी कुछ घंटे, कुछ दिन बिताना चाहते हैं, इसलिए लोग तेज रफ्तार को छोड़कर धीमी और सुकून भरी जिंदगी की तरफ लौटना चाहते हैं।

स्लो लाइफ का सही मतलब: भले ही एक दौर में धीमी रफ्तार, आलस्य का पर्याय मानी जाती रही हो, लेकिन आज जब फास्ट लाइफ को विश्व स्वास्थ्य संगठन बर्नआउट और डिप्रेशन का सबसे बड़ा कारण बता रहा है, तब पूरी दुनिया में स्लो लाइफ या धीमे जीवन की ओर बढ़ने को आलस्य की निशानी नहीं बल्कि नई चेतना का पर्याय माना जा रहा है। वास्तव में स्लो लाइफ का मतलब काम को अधूरा छोड़ देना नहीं है। जीवनशैली से समझौता नहीं है और न ही स्लो लाइफ का मतलब घर में पड़े रहना है बल्कि स्लो लाइफ का मतलब है कम

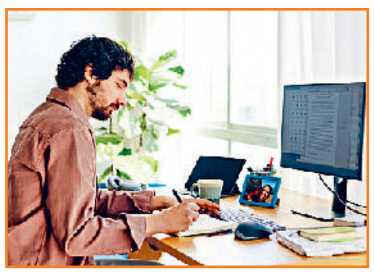

लेकिन अर्थपूर्ण काम करना। स्लो लाइफ का मतलब है डिजिटल डिवाइसेस से घिरे न रहना। बीच-बीच में पूरी तरह से डिजिटल डिटॉक्स होना। स्लो लाइफ का मतलब है स्थानीय जीवन का आनंद लेना और पारिवारिक जीवनशैली का लुत्फ उठाना। स्लो लाइफ का मतलब है, अपने पीढ़ियों पुराने व्यंजनों का आनंद लेना और प्रकृति से भरपूर जुड़ाव रखना। स्लो लाइफ का मतलब है रिश्तों की गुणवत्ता बढ़ाना, न कि उनकी संख्या बढ़ाना। और स्लो लाइफ का एक अंतिम मतलब है हर पल उपलब्ध होने की मजबूरी से मुक्त होना।

दुनिया इसलिए थकी रफ्तार से: द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से लगातार दुनिया तेज रफ्तार जीवनशैली को कामयाबी और स्टेटस सिंबल की तरह पेश करती रही है, तो सवाल है फिर आखिर 21वीं सदी के दो दशक बाद आकर दुनिया का तेज रफ्तारी से मोहभंग क्यों हो गया? इसके पीछे कई महत्वपूर्ण कारण हैं। कोविड के बाद लोगों को जिंदगी की असलियत का एहसास हो गया है कि चाहे जितनी बड़ी कामयाबी हो, चाहे जितनी सुख-सुविधाएं हों और चाहे जितनी संपन्नता हो, लेकिन अगर प्रकृति खफा हो गई, तो जिंदगी की कोई कीमत नहीं रहती। पल भर में सारी कामयाबी, सारी तेज रफ्तारी धरी की धरी रह जाती है। कोविड ने एहसास कराया कि जीवन अस्थायी है। लोग पहली बार जीवन के अस्थायीपन और नश्वरता से दो-चार हुए। यही वह समय था, जब बिना दफ्तर गए भी नौकरी कर सकने का विकल्प हासिल हुआ। जी हां, वर्क फ्रॉम होम ने लोगों को बताया कि अगर दफ्तर न जाना पड़े तो भले एक घंटे ज्यादा भी काम करना पड़े, लेकिन दफ्तर के रास्ते के जोखिम, तनाव और अनुपयोगी समय से बच सकते हैं। कोविड ने लोगों को डिजिटली ओवरलोड कर दिया। लगातार मीटिंग्स, सोशल मीडिया की इंगेजमेंट और नोटिफिकेशंस का सिरदर्द लगातार पेशंस की परीक्षाएं लेती रही और अंततः लोग इस तेज

रफ्तारी से आजीज आ गए।

शहरों से गांव की तरफ वापसी: पूरी 20वीं सदी में और 21वीं सदी के पहले लगभग दो दशकों तक पलायन का मतलब गांव से शहर की ओर जाना ही होता रहा है। लेकिन कोविड के बाद यूरोप में 16 प्रतिशत और अमेरिका में 6 प्रतिशत लोग शहर छोड़कर गांवों में बस गए। भारत में भी उच्च आयवर्ग के 2 प्रतिशत लोग न सिर्फ बड़े शहरों को छोड़कर अपनी जड़ों की ओर रहने के लिए लौटे बल्कि जो पारंपरिक रूप से अपने गांवों या पैतृक स्थानों में नहीं गए, वे भी तेज रफ्तार महानगरों को छोड़कर स्लो मोशन की जिंदगी वाले जंगलों, पहाड़ों के बीच में गांव या गांवनुमा कस्बों की ओर रुख कर गए। मेट्रो शहरों में डेढ़ से दो फीसदी लोग छोटे शहरों या कस्बों की तरफ लौटे। हालांकि भारत में शहरों से गांव की ओर वापसी का आंकड़ा लगभग न के बराबर रहा, क्योंकि भारत के गांव सामान्य सुख-सुविधा वाली जिंदगी के अनुकूल नहीं हैं। इसलिए भारत में बड़े लोग या तो पहाड़ों में बसे छोटे शहरों या कम औद्योगिक और धुर खेतिहर इलाकों के कस्बों की तरफ लौटे। कोविड के बाद ही लोगों ने अपनी छतों पर बागवानी का रोमांच महसूस करना शुरू किया। स्थानीय बाजारों की वापसी हुई, पारंपरिक जीवनशैली में योग और ध्यान की हिस्सेदारी बढ़ी और मानसिक स्वास्थ्य को भी महत्वपूर्ण माना जाने लगा। इससे लोगों ने नींद का सुख महसूस किया, खुद उगाकर सब्जियां खाईं तो स्वाद के साथ आत्मसंतोष महसूस किया, रिश्तों में स्थायित्व और हार्मोनल हेल्थ में बेहतरी का एहसास किया। इसलिए स्लो लाइफ की रेटिंग जो हमेशा फास्ट लाइफ से नीचे रहती थी, पहली बार उससे ऊपर हुई।

कुछ भ्रम भी टूटे: दूसरे विश्वयुद्ध के बाद से ही पूरी दुनिया में यह मान लिया गया था कि स्लो लाइफ का मतलब है- धीमा उत्पादन, धीमा पूंजी निर्माण, मतलब गरीबी और बदहाली। लेकिन कोविड के दौरान और उसके बाद स्लो लाइफ का मतलब यह नहीं रहा। लोगों की सोच में बदलाव आया। कोविड के बाद की स्लो लाइफ ने दुनिया को दिखाया कि धीमे होने का मतलब नाकारा होना नहीं है। धीमे होने का मतलब अर्थव्यवस्था का नुकसान नहीं है और न ही धीमे होने का मतलब उत्पादनहीनता है। स्लो जीवनशैली ने ज्यादा संतुष्टि दी और बेचैन उपभोगवाद पर लगाम लगाया। सबसे बड़ी दौलत रिश्तों में आई गर्मजोशी से मिली। लब्बोलुआब यह कि लोगों को, मजबूरी और उदासीनता में शुरू की गई स्लो लाइफ रास आ गई और अब धीरे-धीरे इससे मोहब्बत बढ़ती ही जा रही है। *

स्लो लाइफ की तरफ धीरे-धीरे बढ़ने के तरीके

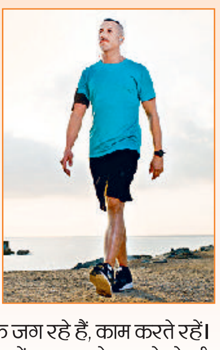

- हर दिन 30 मिनट किसी भी तरह की स्क्रीन से दूर रहें। चाहे टीवी की स्क्रीन हो, मोबाइल की या लैपटॉप की। इस दौरान फोन से नहीं, आस-पास की दुनिया से जुड़ें।
- सप्ताह में कम से कम एक दिन ऐसा रखें, जिसकी पहले से कोई प्लानिंग न हो। एक तरह से इस दिन को कुछ न करने की मस्ती का दिन बनाएं यानी नो प्लान डे।
- पैदल चलना सीखें। एक जमाने में आम आदमी हर दिन कम से कम 5-7 किलोमीटर पैदल चलता था। अब कई लोग ऐसे हैं, जो घर से बाहर सौ मीटर भी हर दिन पैदल नहीं चलते। अगर स्लो लाइफ का लुत्फ उठाना चाहते हैं तो फिर से पैदल चलने की तरफ लौटें। पैदल चलने से मन भी प्रसन्न रहता है और तन भी स्वस्थ रहता है।
- काम की सीमाएं तय करें। दिन में निश्चित घंटों तक ही काम करें और हर दिन के काम की एक मात्रा तय कर लें। यह नहीं कि जब तक जग रहे हैं, काम करते रहें।
- धीमी जिंदगी का रोमांच महसूस करने के लिए दुनिया से भले कम जुड़ें, पर अपने आपसे दोस्ती जरूर करें। खुद से दोस्ती करना भी एक अव्यक्त सुख की स्थिति में रहना है।

ह्यूमन नेचर
शैलेंद्र सिंह

आमतौर पर माना जाता है कि इंट्रोवर्ट स्वभाव के लोगों में आत्मविश्वास और योग्यता की कमी होती है। जबकि यह केवल अलग तरह की एक पर्सनालिटी होती है। इस पर्सनालिटी के कुछ फायदे हैं तो वहीं कुछ नुकसान भी हैं।

न तो वीकनेस-न ही बीमारी अलग होती है इंट्रोवर्ट पर्सनालिटी

आधुनिक मुखर और सोशल मीडिया प्रधान समाज में अंतर्मुखी यानी इंट्रोवर्ट होना अकसर गलतफहमियों का विषय बन जाता है। जबकि अनेक वैज्ञानिक शोध यह साबित करते हैं कि अंतर्मुखी होना न तो किसी तरह की कोई कमजोरी है और न ही बीमारी। हांस आइजेंक के व्यक्तित्व सिद्धांत के मुताबिक अंतर्मुखी और बहिर्मुखी होना व्यक्तियों में मस्तिष्क की उत्तेजना के अलग-अलग स्तरों का होना है। अंतर्मुखी लोगों का बेसलाइन पहले से अधिक होता है, इसलिए वे शोर, भीड़ और अत्यधिक सामाजिक उत्तेजना से जल्द थक जाते हैं। इसलिए वह बहिर्मुखी लोगों के विपरीत

ऐसी तमाम स्थितियों में शांत और खुद तक सीमित रहते हैं। यह उनकी मात्र जैविक वास्तविकता होती है।

मुखर दौर में शांत लोग: आज के तेज आवाजों या शोरगुल से भरे दौर में कई बार अंतर्मुखी लोग खुद को हाशिए पर महसूस करने लगते हैं। लेकिन अगर अंतरराष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक शोधों की नजर से देखें तो अंतर्मुखी लोगों का यह हाशियाकरण उनकी अक्षमता नहीं बल्कि समाज की अपेक्षाओं का नतीजा है। इसलिए जेरोम कगन और हांस आइजेंक जैसे वैज्ञानिकों ने अपने शोध के जरिए साबित किया था कि अंतर्मुखी होना कोई ऐसा व्यवहार नहीं होता, जिसे लोग सीखें या उनमें वह परवरिश के कारण आए। इनके मुताबिक वास्तव में अंतर्मुखी होना एक किस्म की जैविक संरचना से जुड़ा तथ्य है, क्योंकि अंतर्मुखी लोगों का नर्वस सिस्टम दूसरे सामान्य लोगों के मुकाबले कहीं अधिक संवेदनशील होता है। लेकिन आधुनिक दौर में एक्सट्रोवर्ट यानी बहिर्मुखी लोगों को ही आदर्श मान लिया जाता है। इसके विपरीत इंट्रोवर्ट लोगों को महत्व और मान्यता नहीं दी जाती, जो महत्व और मान्यता बहिर्मुखी लोगों के खाते में आती है और इसकी शुरूआत बचपन से ही पहले घर में और फिर स्कूल में हो जाती है। वहां शांत रहने वाले बच्चों को उपेक्षित किया जाता है, भले ही वह कितना भी योग्य क्यों न हो। इसके बाद कॉर्पोरेट दफ्तरों में भी लीडर वही माना जाता है, जो ज्यादा बोलता हो और किसी भी तरह के मामले में त्वरित प्रतिक्रिया करता हो। जबकि कई बार संकट के समय अंतर्मुखी लोग ज्यादा बेहतर निर्णय लेते हैं। खासकर अगर वैज्ञानिकों, लेखकों आदि से जुड़ा कार्य हो। अडम ग्रांट ने अपने शोध से साबित किया कि प्रो-एक्टिव टीमों में अकसर ऐसे लीडर ज्यादा सफल होते हैं।

इंट्रोवर्ट होने के फायदे: इंट्रोवर्ट पर्सनालिटी होने के कई फायदे होते हैं। जैसे-अंतर्मुखी लोगों में गहन सोच और निर्णय क्षमता होती है। ये किसी भी विषय पर अकसर जानकारियों को बहुत गहराई तक प्रोसेस करते हैं और जल्दी में निर्णय लेने से बचते हैं। इसलिए उनके निर्णय अधिकतर सफल, सुरक्षित और सुलझे हुए होते हैं। यही कारण है कि रचनात्मक और जटिल कामों में उनकी गुणवत्ता उच्च स्तर की होती है। ऐसे लोगों में सुनने और सहानुभूति की क्षमता बहिर्मुखी लोगों से ज्यादा होती है। अंतर्मुखी लोग बेहतर श्रोता होते हैं, जिससे रिश्तों में विश्वास और गहराई बनती है। टीम लीडरशिप में यह गुण सहकर्मियों के हुनर को बाहर निकालने में मदद करता है। अंतर्मुखी लोगों में अकेले में लंबे समय तक काम करने की क्षमता और फोकस में बने रहने की प्रवृत्ति होती है। इस कारण ऐसे लोग अनुसंधान, लेखन, डिजाइन जैसे रचनात्मक क्षेत्रों में काफी सफल होते हैं।

इंट्रोवर्ट होने के नुकसान: इस स्वाभाव के कारण इन लोगों में कुछ खामियां भी देखी जाती हैं। मसलन- अकसर ऐसे लोग वर्बल नेटवर्किंग, पब्लिक फेसिंग जॉब्स, सेल्स या राजनीतिक भूमिकाओं में फिट नहीं बैठते। ऐसी जगहों में अव्वल तो ये आते ही नहीं और आते हैं तो सफल नहीं होते हैं। दुनिया में कई काम और कई गतिविधियां ऐसी होती हैं, जो खुले रूप से बातचीत और आत्मप्रचार को तरजीह देती हैं। इस मामले में ये कमजोर पड़ते हैं। कई अध्ययनों में यह सामने आया है कि ऐसे लोगों में

अवसाद या अकेलेपन से घिरने का जोखिम बना रहता है। लेकिन यह सभी अंतर्मुखी लोगों के लिए सच नहीं होता। आज के मुखर युग में शांत या गंभीर रहना अकसर आत्मविश्वास की कमी समझ लिया जाता है। इसलिए आज के दौर में ऐसे लोग कई बार प्रमोशन पाने, मान्यता हासिल करने और सार्वजनिक मंचों पर अपनी कामयाब उपस्थिति बनाने में नाकाम रहते हैं। *

वासंती दोहे
घमंडीलाल अग्रवाल

टेसू की सरगम छिड़ी

धरती ने सज-धज किया, दुलहन-सा शृंगार।
पीत-वसन से झांकता, मानो पहला प्यार।।
जगा रही है कोकिला, मन में मीठी हूक।
गोरी पी की बाट में, बैठी बन कर मूक।।
भ्रमर सभी हैं पी रहे, फूलों का मकरंद।
पंचम सुर में गूंजते, खुशियों वाले छंद।।
धीमे-धीमे नशे में, पवन चले है खूब।
प्राणी-प्राणी जा रहा, अजब नशे में डूब।।
उर में जागी आग-सी, अंग-अंग उन्माद।
संग उन्हें भी आज लाए जा री सौतन याद।।
कण-कण से गायब हुआ, सर्दी का आतंक।
मुस्कानों ने पा लिए, सबसे ज्यादा अंक।।
धूप कुनमुनी डोलती, गरमाया परिवेश।
मधुर गंध का बांटता, हर उपवन संदेश।।
सरसों रानी पर चढ़ा, यों यौवन का रंग।
ठुमक-ठुमक कर बोलती, चली पिया के संग।।
बैरागी मन पूछता, किसका है यह खेल।
मौसम का जादू चला, फली प्रीति की बेल।।
टेसू की सरगम छिड़ी, महुआ के हैं ठाठ।
जरा देखिए खुल गई, फगुनाहट की हाट।।

व्यंग्य / अजय अनुरागी

अफसर की टांग

सुना था कानून के हाथ बहुत लंबे होते हैं, लेकिन देखा यह भी गया है कि कुछ अफसरों की टांग भी बहुत लंबी होती है। ऐसे ही एक अफसर की टांग दूर तक पसरी रहती थी। वह बैठता इस कक्ष में था, और टांग उस कक्ष तक फैलाए रखता था। कार्यालय के जिस कक्ष में जाओ वहीं अफसर की टांग घूमती नजर आती थी। अफसर जहां नहीं पहुंच पाता था, वहां भी उसकी टांग पहुंच जाती थी। कई बार अफसर से पहले उसकी टांग उपस्थित रहा करती थी। लोग अफसर से कम उसकी टांग से ज्यादा परेशान रहा करते थे। अब अफसर की टांगों में घंटी कौन बांधे भला!

टांग अफसर से भी ज्यादा चालाक थी। किसी को पास फटकने नहीं देती थी। अफसर की अनुपस्थिति में अफसर की टांग शासन किया करती थी। लोग चाहते थे कि अफसर टांग को थोड़ा लूज करें, तो चैन की सांस आ सके। हालांकि अफसर छोटा-मोटा था, लेकिन उसकी टांग बहुत बड़ी थी। उसकी टांग भरोसे लायक तो थी ही नहीं, फिर भी उस पर भरोसा करना पड़ता था। वह चालाक था और दूसरों की टांग को अपने हित में इस्तेमाल करना जानता था। इसलिए लोग अफसर की टांगों से अपनी टांगें बचाते फिरते थे, क्योंकि उन्हें डर था कि अफसर उनकी टांगों को अपनी टांगों में ना बदल डाले। अफसर टांग का बहुत कच्चा था, इसलिए अपनी टांग को हर जगह टांग कर ले जाता था। टांग के बिना कहीं जाता भी नहीं था। टांग ने इतना प्रभाव जमा लिया था कि अफसर प्रभावहीन होने लगा था। अफसर की दोनों टांगों की दो अलग-अलग परंपराएं थीं। मगर अफसर दोनों को साध लेता था। अकसर लोग अफसर की पहली टांग के भरोसे दूसरी टांग से धोखा खा बैठते थे।

अफसर की टांगों को लेकर लोगों में बड़ा कंफ्यूजन था। पता नहीं पड़ता था कि पहली कौन सी है और दूसरी कौन सी है? लोग जिसे पहली समझते थे, वह दूसरी निकलती थी। जिसे दूसरी समझते थे, वहां टांग होती ही नहीं थी। चालाक अफसर हर मुद्दे पर एक टांग को फंसा कर रखता था तथा दूसरी टांग को बचाकर रखता था। टांग विहीन अफसर नख-दंत विहीन शेर की तरह होता है, जो गुर्रा तो सकता है मगर दबोच नहीं सकता। वह अफसर ही क्या जिसके पास टांग न हो! वह टांग ही क्या जो अड़ना न जाने। अफसर की टांगों की करामात यह थी, कि पहली उठ जाती थी तो दूसरी बैठी रहती थी, और दूसरी उठ जाती थी तो पहली लेट जाती थी। अफसर चाहता था एक साथ, एक टांग, दो काम करती रहे, ताकि टांग की स्ट्रेटेजी कोई पकड़ ना पाए। टांग से परेशान लोग, टांग को उखाड़ फेंकने के लिए, एकजुट हुए। अंत में हुआ यह कि अफसर उखड़ गया, मगर उसकी टांगें नहीं उखड़ पाईं। *

लघुकथा / गोविंद भारद्वाज

शक

शाम को ऑफिस से घर लौटते ही पति हरीश से उपासना ने कहा, 'देखिए, रोज शाम को पता नहीं पिताजी कहां जाते हैं और देर तक लौटते हैं।' 'कहां जाएंगे पार्क के अलावा। वहां इनके हम उम्र लोग मिलते होंगे। बस उनके साथ ही गपशप करते होंगे।' हरीश ने जवाब दिया।

'नहीं मुझे ऐसा नहीं लगता पिताजी कहीं और ही जाते हैं और मुझसे रोज अलग-अलग तरह का नाश्ता बनवाते हैं।' उपासना ने बताया। 'तुम भी बेवजह पिताजी पर शक कर रही हो। जो उनकी इच्छा है उन्हें करने दो। मां के चले जाने के बाद उनकी इच्छाओं का ख्याल हम नहीं रखेंगे तो भला कौन रखेगा?' हरीश ने समझाया। उसी समय पिताजी कमरे के अंदर आए और बोले, 'बहू आज गर्मा-गर्म समोसे बनाकर पैक कर दो, मुझे जाना है।' 'जी पिताजी।' उपासना ने धीरे से कहा। समोसे लेकर जैसे ही पिताजी घर से निकले, उपासना भी छुपते हुए उनके पीछे-पीछे चल दी। एक-डेढ़ किलोमीटर चलने के बाद पिताजी एक वृद्धाश्रम के भीतर चले गए। 'अच्छा तो यह बात है। अपने किसी यार-दोस्त को खिलाने लाते हैं पकवान।' उपासना मन ही मन बुदबुदाई। फिर दावाजे की ओट लेकर खड़ी हो गई। पिताजी किसी के साथ बैठकर समोसे खाते हुए ठहाके लगाने लगे। 'अरे, यह आवाज तो बहुत जानी-पहचानी लग रही है। कौन हैं वो, जिसके लिए पिताजी रोज नाश्ता बनवाकर लाते हैं?' मन ही मन बुदबुदाते हुए उपासना ने कमरे के भीतर झांका। 'अरे यह क्या!' वह अवाक रह गई। उसके पैरों तले की जमीन खिसक गई। 'मेरे बाबूजी वृद्धाश्रम में!' खुद से कहकर वह रोने लगी। दरअसल, उपासना के बाबूजी पिछले एक महीने से वृद्धाश्रम में रह रहे थे, जिसकी खबर केवल हरीश के पिताजी को ही थी। इसलिए वे रोज उपासना और हरीश से बताए बिना अपने समधी से मिलने यहां आया करते थे। *

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

स्त्री के आंतरिक द्वंद्व की कहानियां

यह सही है कि बदलते समय के साथ परिवार और घर से बाहर भी स्त्री की भूमिका में बड़ा बदलाव आया है। मगर कमोबेश उसकी पीड़ा, घुटन और त्रासदियां अब तक नहीं बदलीं। हां, उसके रूप जरूर बदले हैं। वरिष्ठ लेखिका कल्पना मनोरमा ने अपने कहानी संग्रह 'एक दिन का सफर' में स्त्री के इसी बहुआयामी द्वंद्व को बड़ी बारीकी और मार्मिकता से उकेरा है। इन कहानियों में उन्होंने बेशुमार दबावों, तनावों से आहत स्त्री की पीड़ा को स्वर दिया है। संग्रह की कहानियां सशक्त होने के साथ ही समकालीन संदर्भों में प्रासंगिक भी हैं। इसमें आज के दौर की महिलाओं के संघर्ष को भी देखा जा सकता है।

इस संग्रह की पहली कहानी 'कितनी कैदें' के किरदार की घुटन, जैसे आत्मा को निर्ममता से छील कर लहूलुहान कर देती है। मर्यादा, इज्जत के नाम पर किस तरह बेटियां बिना अपराध के बलि पर चढ़ा दी जाती हैं, इस कटु सत्य को कहानी बड़े मार्मिक तरीके से बयां करती है। शीर्षक कहानी 'एक दिन का सफर' में नायिका के भीतर का द्वंद्व उसका अपना नहीं है। यह स्त्री का सामूहिक द्वंद्व है। वही द्वंद्व, जिसका सामना उसे बाहर-भीतर हर कहीं करना होता है। 'आखिरी सिगरेट' दांपत्य जीवन में प्रेम की लालसा में घुटती एक स्त्री मन की कहानी है तो 'गुनिता की गुड़िया' कैद से बाहर निकलने की एक स्त्री की छटपटाहट को बयां करती है। 'दुख का बोनसाई' मायके से लड़की के अटूट रिश्ते की कहानी है। ये कहानियां ऐसी हैं, जिनसे सहज ही हर स्त्री जुड़ाव महसूस करेगी। सटीक-जीवंत रूपकों के प्रयोग से भाषा जीवंत हो उठी है। कहानियों की भाषा ही नहीं कहन का शिल्प भी बेहतरीन है। *

पुस्तक: एक दिन का सफर, **लेखिका:** कल्पना मनोरमा, **मूल्य:** 195 रुपए, **प्रकाशक:** अनन्य प्रकाशन, दिल्ली

मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर, श्रीशैलम

अन्नामलाईयार मंदिर, तिरुवन्नामलाई

मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर, मदुरै

धार्मिक स्थल

शिखर चंद जैन

आज पूरे देश में महाशिवरात्रि का पावन पर्व मनाया जा रहा है। इस अवसर पर देश भर के शिव-शक्ति मंदिरों में भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ता है। इस मौके पर हम आपको दक्षिण भारत में स्थित कुछ प्राचीन, भव्य और प्रसिद्ध शिव मंदिरों की विशेषताओं के बारे में बता रहे हैं। साथ ही गुजरात में स्थित अनोखे स्तंभेश्वर महादेव मंदिर के बारे में भी बता रहे हैं।

महादेव शिव-पार्वती को समर्पित
भव्य-अनोखे-प्रसिद्ध मंदिर

जिस तरह उत्तर भारत में स्थित महाकालेश्वर, काशी विश्वनाथ, नागेश्वर महादेव, वैद्यनाथ आदि शिव मंदिरों के प्रति श्रद्धालुओं में असीम श्रद्धा है। उसी तरह दक्षिण भारत में भी कई अनोखे और भव्य मंदिर स्थित हैं। प्राचीन भारत में चोल, पल्लव और चालुक्य जैसे कई राजवंशों ने लंबे समय तक दक्षिण भारत पर शासन किया। अपने शासनकाल में उन राजाओं ने देवों के देव महादेव भगवान शिव के अत्यंत भव्य मंदिरों का निर्माण कराया। इन मंदिरों की अनोखी वास्तुकला दुनिया भर के पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करती है। इनमें से कुछ मंदिर देश में स्थित बारह ज्योतिर्लिंगों में भी सम्मिलित हैं। ये प्राचीन मंदिर श्रद्धालुओं और शिव भक्तों की आस्था के प्रमुख केंद्र हैं।

मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर, श्रीशैलम आंध्र प्रदेश: यह शिव मंदिर आंध्र प्रदेश के श्रीशैलम नामक छोटे से शहर में कृष्णा नदी के किनारे स्थित है। सातवाहन शासनकाल के इतिहास के अनुसार इस मंदिर का निर्माण काल द्वितीय शताब्दी के आस-पास माना जाता है। बाद में विजय नगर साम्राज्य के राजाओं और छत्रपति शिवाजी महाराज ने इस मंदिर में मंडप सहित कई संरचनाओं का निर्माण करवाया। यह मंदिर नल्लामलाई पहाड़ियों पर स्थित है, जो मंदिर को एक सुंदर पृष्ठभूमि प्रदान करता है। दक्षिण भारत में स्थित मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। इस मंदिर की एक और विशेषता यह भी है कि यह देवी सती के 52 शक्ति पीठों में से एक है। यहां भगवान शिव की मल्लिकार्जुन अवतार में और माता पार्वती की भ्रामरंबा रूप में पूजा की जाती है। यहां महाशिवरात्रि, उगादि, कार्तिकाई, श्रवणमहोत्सवम धूमधाम से मनाते हैं।

तट मंदिर, महाबलीपुरम

तट मंदिर, महाबलीपुरम तमिलनाडु: तट मंदिर दक्षिण भारत के सबसे पुराने संरचनात्मक मंदिरों में से एक है। यह परिसर बंगाल की खाड़ी के तट पर तमिलनाडु के महाबलीपुरम में समुद्र के किनारे स्थित है। इसे अपनी द्रविड़ वास्तुकला और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है। इस मंदिर का निर्माण पल्लव वंश के राजा नरसिंहवर्मन द्वितीय (राजसिंह) द्वारा ग्रेनाइट पत्थरों से कराया गया। इसके परिसर में तीन मंदिर हैं, जिनमें से दो भगवान शिव को और एक भगवान विष्णु को समर्पित है। मुख्य मंदिर पूर्व दिशा की ओर इस तरह से निर्मित है, जिससे सूर्योदय की किरणें शिवलिंग तक पहुंच सकें। सन् 1984 में इस मंदिर को महाबलीपुरम में स्मारकों के समूह के हिस्से के रूप में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया।

अन्नामलैयार मंदिर, तिरुवन्नामलाई तमिलनाडु: तमिलनाडु के तिरुवन्नामलाई शहर में स्थित अन्नामलैयार मंदिर बहुत प्रसिद्ध शिव मंदिर है। अरुणाचल पहाड़ियों की तलहटी में स्थित होने के कारण इसे अरुणाचलेश्वर मंदिर भी कहा जाता है। यह पंचभूत स्थलों में से एक है, जहां भगवान शिव अग्नि तत्व के रूप में विराजमान हैं। शिवलिंग को अग्निलिंग भी कहा जाता है और यहां भगवान शिव की पूजा अरुणाचलेश्वर के रूप में की जाती है। अन्नामलैयार मंदिर परिसर भारत के सबसे विशाल मंदिर परिसरों में से एक है। इस मंदिर का 11 मंजिला गोपुरम भारत के सबसे ऊंचे मंदिर गोपुरमों में से एक है, जिसकी ऊंचाई 66 मीटर है। इस मंदिर के मुख्य देवता अरुणाचलेश्वर और अन्नामलाई अम्मन हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं में वर्णित यह मंदिर अपनी उत्कृष्ट वास्तुकला के लिए जाना जाता है।

मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर, मदुरै तमिलनाडु: मंदिर नगरी के नाम से विख्यात मदुरै के सबसे भव्य मंदिरों में से एक अरुलमिगु मीनाक्षी अम्मन् मंदिर है, जिसे मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर भी कहा जाता है। इस मंदिर की मुख्य देवी मीनाक्षी देवी हैं, जिन्हें देवी पार्वती का दिव्य अवतार माना जाता है। भगवान शिव की पूजा भगवान सुंदरेश्वरार के रूप में की जाती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, यह वह स्थान है, जहां सुंदरेश्वरार ने देवी मीनाक्षी से विवाह किया था। सन 1190 से 1205 ईसवी तक शासन करने वाले पांड्य राजा सदावर्मन कुलशेखरन प्रथम ने मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर का निर्माण करवाया था। यह मंदिर अपने गोपुरमों (मंदिर के शिखर), विशाल हॉल, मूर्तियों, नक्काशी और वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। यह दक्षिण भारत के भव्य मंदिरों में से एक है। *

स्तंभेश्वर महादेव, वड़ोदरा गुजरात

दक्षिण भारत से दूर पश्चिमी राज्य गुजरात में भी एक प्रसिद्ध-विशिष्ट मंदिर स्तंभेश्वर महादेव स्थित है। इसमें एक ऐसा अनोखा शिवलिंग है, जिसका जलाभिषेक स्वयं समुद्र अपने जल से प्रतिदिन दो बार करता है। यह मंदिर अरब सागर में स्थित है और दिन में दो बार समुद्र में डूब कर अदृश्य हो जाता है। समुद्र का खारा जल इस शिवलिंग को कोई नुकसान नहीं पहुंचाता। यह मंदिर गुजरात के भरूच शहर से लगभग 35 किलोमीटर दूर सागर विस्तार के निकट जंबुसबुरता लुकालुका के नजदीक कावि, कंबोई गांव में स्थित है। इस मंदिर में स्वयंभू शिवलिंग की ऊंचाई 4 फीट और व्यास 2 फीट है। इस शिवलिंग के चारों ओर तट पर मंदिर का निर्माण सातवीं सदी के आस-पास हुआ था। माना जाता है कि चावड़ी के संतों द्वारा इसका निर्माण करवाया गया था। बाद में इस मंदिर का पुनर्निर्माण आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा भी करवाया गया था। शिव महापुराण, स्कंद पुराण जैसे पौराणिक ग्रंथों में भी इस मंदिर के शिवलिंग का उल्लेख मिलता है।

मंदिर के दर्शन तभी संभव हैं, जब समुद्र में ज्वार कम हो और समुद्र का पानी तट से उतरने लगे। इस मंदिर के ओझल होने का कारण समुद्र में उठा ज्वार होता है। ज्वार के कारण पानी के उद्वेग के समय शिवलिंग पूरी तरह से जलमग्न हो जाता है। मंदिर भी सागर की गहरी लहरों में समा जाता है। तब तट से भी मंदिर दिखना बंद हो जाता है। यहां आने वाले शिवभक्तों को प्रतिदिन के दर्शन के समय ज्वार की जानकारी दी जाती है, जिससे ज्वार-भाटे के समय की जानकारी रहने पर उन्हें किसी परेशानी का सामना न करना पड़े। स्तंभेश्वर महादेव मंदिर में हर अमावस्या को मेला लगता है। प्रदोष, पूर्णिमा, एकादशी को यहां पूरी रात पूजा-अर्चना होती है। भगवान शिव के इस अद्भुत मंदिर में देश-विदेश से श्रद्धालु और पर्यटक आते रहते हैं।

- प्रभा पारीक

भारत में भी धूमधाम से मनाते हैं
तिब्बती नव वर्ष लोसर फेस्टिवल

पर्व-संस्कृति

अंजू जैन

हम सब पश्चिमी कैलेंडर के अनुसार 1 जनवरी को और हिंदू पंचांग के अनुसार चैत्र प्रतिपदा को नव वर्ष मनाते ही हैं। इनके अलावा कुछ प्रदेशों में तिब्बती नववर्ष लोसर भी मनाया जाता है। इसकी विशेषताओं पर एक नजर।

वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा को साकार होते देखने जैसा है तिब्बती नव वर्ष का भारत में धूमधाम से मनाया जाना। आज पूरी दुनिया में लोग एक-दूसरे के खान-पान, पहनावे और त्योहारों को अपना रहे हैं। भारत में पाश्चात्य नव वर्ष मनाया जाना तो बहुत सामान्य बात है लेकिन बहुत कम लोगों को पता होगा कि हमारे देश में तिब्बती नव वर्ष लोसर को भी धूमधाम से मनाया जाता है।

क्या है लोसर उत्सव: 'लोसर' दो तिब्बती शब्दों से मिलकर बना है, जिसमें 'लो' का अर्थ 'नया' और 'सर' का अर्थ 'वर्ष' होता है, जिसका सामूहिक अर्थ 'नया साल' है। लोसर तिब्बत, नेपाल और भूटान का सबसे महत्वपूर्ण बौद्ध त्योहार है। हमारे देश में यह मुख्य रूप से सिक्किम, लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश में तिब्बती बौद्ध समुदाय एवं कुछ स्थानीय जनजातियों द्वारा मनाया जाता है। यह उत्सव जीवन के नवीनीकरण, समृद्धि और आध्यात्मिक शुद्धि का प्रतीक है।

सांस्कृतिक महत्व: लोसर उत्सव को हालांकि 'तिब्बती नव वर्ष' कहा जाता है, लेकिन इसकी जड़ें बौद्ध धर्म के आगमन से भी पुरानी हैं। यह मूलतः 'बोन' परंपरा का हिस्सा था, जहां लोग सर्दियों के अंत में प्रकृति को धन्यवाद देने के लिए धूप जलाते थे। बाद में, जब बौद्ध धर्म तिब्बत की मुख्य धारा बना, तो यह उत्सव आध्यात्मिक और धार्मिक रंगों में रंग गया। इस वर्ष लोसर 18 फरवरी, बुधवार को मनाया जाएगा। इसका मुख्य उत्सव आमतौर पर तीन दिनों तक चलता है, लेकिन यह त्योहार 15 दिनों तक मनाया जाता है।

साफ-सफाई का महत्व: लोसर में साफ-सफाई का खास महत्व है। सबसे पहले 'लाबा लोसर' मनाया जाता है, जिसमें घरों की पुताई और सफाई की जाती है। सभी पुरानी, अनुपयोगी वस्तुओं को हटा दिया जाता है। मान्यता है कि ऐसा करने से घर में अच्छा स्वास्थ्य, शांति और समृद्धि आती है। इस अवसर पर घरों को सजाया जाता है और नई प्रार्थना पताकाएं फहराई जाती हैं।

विशेष खान-पान: लोसर पर विशेष भोजन जैसे 'खप्से' (तले हुए बिस्कुट) और 'गुथुक' (एक प्रकार का नूडल सूप) तैयार किए जाते हैं। अमावस्या की पूर्व संध्या पर परिवार 'गुथुक' पीते हैं।

तीन दिनों तक विशेष कार्यक्रम: लोसर उत्सव के पहले दिन सूर्योदय से पहले ही मठों में शंखों की आवाज गूंजने लगती है। इस दिन लोग अपने धर्मगुरुओं का आशीर्वाद लेते हैं। देवताओं और आत्माओं के लिए धार्मिक अनुष्ठान करते हैं, जिसमें घरों में घी के दीये जलाना और बौद्ध धर्मग्रंथों का पाठ करना शामिल है। दलाई लामा और अन्य उच्च लामाओं की लंबी उम्र के लिए प्रार्थना की जाती है। घरों में 'चेमार' (सत्तू और मक्खन का मिश्रण) का भोग लगाया जाता है।

दूसरा दिन 'ग्यालपो लोसर' (राजाओं का दिन) होता है। यह दिन सामुदायिक मिलन का होता है। ऐतिहासिक रूप से यह दिन शासकों और उनके मंत्रियों के बीच संवाद का होता था। आज के संदर्भ में, यह सार्वजनिक समारोहों, नाच-गाने और मेलों का दिन है। लद्दाख और धर्मशाला की सड़कों पर पारंपरिक पोशाक 'चूबा' पहने लोग एक-दूसरे को 'लोसर ताशी देलेक' (नए साल की शुभ मंगलकामनाएं) कहते हैं।

तीसरा दिन 'चो-क्योंग लोसर' (धर्म रक्षकों का दिन) है। इस दिन लोग पहाड़ की चोटियों पर जाकर 'धूप' (सांग) जलाते हैं और प्रार्थना झंडे (लुंगता) फहराते हैं। ये झंडे शांति, करुणा और शक्ति के प्रतीक हैं।

मुखौटा नृत्य (छम): लोसर उत्सव का सबसे रोमांचक पहलू मठों में होने वाला 'छम' या मुखौटा नृत्य है। यह नृत्य बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। रंगीन रेशमी कपड़े और भयानक दिखने वाले मुखौटे पहनकर लामा नृत्य करते हैं। ड्रम और लंबी झांझों की थाप पर किया जाने वाला यह नृत्य दर्शकों को एक अलग ही आध्यात्मिक दुनिया में ले जाता है। *

फैशन जोन

प्रतिमा अरोड़ा

बदलते मौसम के अनुसार हमारे ड्रेसिंग सेंस में बदलाव होने लगता है। यही वजह है कि इन दिनों यंगस्टर्स शर्ट और जैकेट का कॉम्बो यानी शैकेट पहनना काफी पसंद कर रहे हैं। इसकी क्या है खासियतें और यंगस्टर्स इन्हें क्यों पसंद करते हैं, इस बारे में आप भी जरूर जानना चाहेंगे।

बदलते मौसम में परफेक्ट
शैकेट से मिले स्मार्ट लुक

सर्दी का मौसम जैसे-जैसे विदा ले रहा है, मौसम हल्का गर्म होने लगा है, तो फैशन की दुनिया भी करवट ले रही है। भारी कोट, मोटे स्वेटर, अब वार्डरोब या अलमारियों में जाने लगे हैं। इनके स्थान पर हल्के स्टाइलिश और बहुपयोगी शर्ट+जैकेट या शैकेट का क्रेज दिनोंदिन बढ़ने लगा है। शैकेट वास्तव में शर्ट की आरामदेह संरचना और जैकेट की मजबूती का मिश्रण होता है। यह न तो पूरी तरह से शर्ट और न ही पूरी तरह से जैकेट बल्कि दोनों का संतुलित रूप होता है। इसीलिए यंगस्टर्स के बीच यह तेजी से लोकप्रिय हो रहा है।

इसलिए युवाओं को है पसंद: फरवरी और मार्च का महीना वासंती मौसम के महीने होते हैं। इस दौरान न ज्यादा ठंड और न ही ज्यादा गर्मी होती है। ऐसे समय में शैकेट युवाओं के लिए परफेक्ट विकल्प बनकर आता है। लेयरिंग में आसानी भी एक बड़ा कारण है कि यह तेजी से ट्रेंडी हो रहा है। दरअसल टी-शर्ट, फुलस्लीव शर्ट या पतली हुडी के ऊपर शैकेट पहनकर स्टाइलिश लुक मिल जाता है। इसे पहनने का एक फायदा यह भी है कि यह शरीर पर टाइटनेस के साथ चिपकता नहीं है। शरीर लंबे समय तक इसके साथ कंफर्टेबल रहता है और सबसे बड़ी बात यह है कि यह यूनिसेक्स अपील रखता है। यह लड़कों और लड़कियों दोनों पर समान रूप से सूट करता है। इसीलिए खासतौर पर कॉलेज गोइंग यंगस्टर्स को शैकेट बहुत पसंद आ रहा है। इसका फैब्रिक पतला होता है। यह फिट होता है लेकिन बहुत टाइट नहीं होता है। यह ठंड से बचाता है लेकिन बहुत गर्म अहसास नहीं कराता है। इसके बटन और सिलाई काफी मजबूत होती है। इसका वजन हल्का होता है ताकि लेयरिंग को आसान बनाए। इन्हीं वजहों से यंगस्टर्स इन्हें पहनना पसंद करते हैं। शैकेट का ट्रेंड सिर्फ अपने देश में ही नहीं पूरी दुनिया के युवाओं को भा रहा है, क्योंकि अगर फैशन इतिहास को देखें तो शैकेट की जड़ें वर्किंग मैन वियर और मिलिट्री क्लोदिंग से जुड़ी हुई हैं।

बनता है इन फैब्रिक्स से: शैकेट आमतौर पर कॉटन ट्विल, डेनिम, कॉडरॉय और वूलेन मिश्रित फैब्रिक से बने होते हैं। हल्के वजन वाले कॉटन मिक्स शैकेट इस बदलते मौसम में ज्यादा पसंद किए जाते हैं। अगर थोड़ी ठंड महसूस हो तो वूलेन मिक्स्ड शैकेट आप वियर कर सकते हैं। वैसे तो आपको शैकेट्स में कलर्स की ढेरों वैरायटीज मिल जाएंगी। आप उनमें से अपनी पसंद का कोई कलर सेलेक्ट कर सकते हैं। लेकिन अगर शैकेट में कलर और पैटर्न ट्रेंड की बात करें तो ऑलिव ग्रीन, टैन ब्राउन, चारकोल ग्रे, डेनिम ब्लू कलर के शैकेट्स बहुत अट्रैक्टिव लगते हैं। अब यंगस्टर्स के बीच ब्राइट कलर वाले शैकेट्स के बजाय सॉफ्ट और अर्थी टोन वाले शैकेट्स की मांग ज्यादा बढ़ रही है, क्योंकि ये ज्यादा मैचिंग फ्रेंडली होते हैं। जहां तक शैकेट में ट्रेंडी पैटर्न और डिजाइन की बात है तो चेक्स प्रिंटेड और प्लेड पैटर्न यंगस्टर्स के बीच काफी पसंद किए जाते हैं।

लगातार बढ़ रही है डिमांड: हाल के सालों में बदलते मौसम में बाजार में शैकेट की लगातार मांग बढ़ रही है। क्योंकि कुछ वर्षों में ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म और लोकल ब्रांड ने अपनी नियमित क्लेक्शन में भी शैकेट को शामिल किया है। फैशन रिटेल से जुड़े जानकारों के मुताबिक यह ट्रांजिशनल वियर यानी बदलते मौसम के समय का फैशन हर साल 15 से 20 फीसदी तक वृद्धि हासिल कर लेता है। इसकी बढ़ती मांग का एक कारण यह है कि यह मीडियम रेंज में उपलब्ध होता है। वियर करने पर बहुत सोबर और एलीगेंट लुक देता है। इसके अगर बजट रेंज की बात करें तो शैकेट 800 से 1500 रुपए में मिल जाता है। मिड रेंज की बात करें तो 1500 से 3000 रुपए के बीच इसका रेंज देखा जा सकता है। जबकि प्रीमियम रेंज की बात करें तो 3000 रुपए से ऊपर आपको फाइन क्वालिटी के शैकेट मिल जाते हैं। इसकी यह रेंज दर्शाती है कि हर वर्ग के यंगस्टर्स के लिए शैकेट्स उपलब्ध हैं। यही कारण है कि अपने देश में इसकी डिमांड बदलते मौसम में बढ़ जाती है। इसकी मांग के पीछे एक कारण सस्टेनेबिल्टी भी है। कई ब्रांड अब रि-साइकिल्ड फैब्रिक और आर्गेनिक कॉटन से शैकेट बना रहे हैं। उससे पर्यावरण पर कम असर पड़ता है और युवावर्ग को यह सोच पसंद आती है कि वे स्टाइल के साथ-साथ अपनी सामाजिक जिम्मेदारियां भी पूरी कर रहे हैं।

पर्सनालिटी को देता है नया लुक: शैकेट की एक खासियत यह है कि यह तमाम दूसरे फैशन के साथ मर्ज नहीं हो रहा बल्कि एक अलग से पहचान बनाने में कामयाब है। आज के दौर में यंगस्टर्स फैशन को केवल कोई भी ड्रेस पहनने तक सीमित नहीं मानते बल्कि उससे अपने आराम और प्रभाव की तुलना करते हैं। शैकेट इन दोनों कसौटियों में खरा उतरता है। यही कारण है कि यह युवाओं को पसंद आता है। इससे उन्हें स्मार्ट लुक मिलता है। *

फिल्म 'विधाता' में दिलीप कुमार-शम्मी कपूर

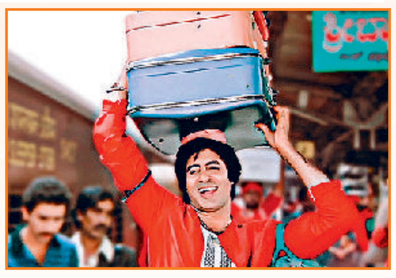
फिल्म 'कुली' के सीन में अमिताभ बच्चन

'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' का क्लाइमेक्स सीन

सिने ट्रेंड

अशोक वाधवाणी

रेल में सफर का अलग ही मजा होता है। देश के करोड़ों लोगों की लाइफलाइन से जुड़ी रेलगाड़ी को बॉलीवुड फिल्मों में भी खूब दिखाया जाता रहा है। खास बात यह है कि फिल्मों में ट्रेन वाले सीन और सॉन्ग्स खूब पॉपुलर भी हुए हैं। यहां बात कुछ ऐसी ही फिल्मों की, जिनके टाइटल, सीन या सॉन्ग में ट्रेन मौजूद रही है।

फिल्मों में खूब हुए पॉपुलर
ट्रेन बेस्ड सींस-सॉन्ग्स

अपने देश में आज भी अधिकांश लोगों के लिए रेल यात्रा सबसे सुविधाजनक और सस्ती मानी जाती है। यही वजह है कि हिंदी फिल्मों में भी मालगाड़ी से लेकर, यात्री गाड़ी और अत्याधुनिक ट्रेनें भी दिखाई जाती रही हैं। ट्रेन यात्रा से जुड़े दृश्य और गीत मन में अमिट छाप छोड़ते हैं। एंटरटेनमेंट के लिए रेल में रोमांस, रोमांच, रहस्य के अलावा रेलवे स्टेशन, प्लेटफॉर्म, रेल की पटरियां, कुली आदि बहुत कुछ हिंदी फिल्मों में दिखाए जाते रहे हैं।

ट्रेन से जुड़े फिल्मों के नाम: बॉलीवुड में कई ऐसी फिल्में बनी हैं, जिनके टाइटल ट्रेन या रेलवे के इर्द-गिर्द रखे गए हैं। पुराने जमाने की नायिका नादिया की कई चर्चित फिल्मों के नाम ट्रेन के नाम पर ही रखे गए। उनमें से प्रमुख हैं 'मिस फ्रंटियर मेल'(1936), 'पंजाब मेल'(1939), 'दिल्ली एक्सप्रेस' (1949)। इसी क्रम में 'प्लेटफॉर्म' (1955), '27 डाउन' (1974), 'द ट्रेन' (1971), 'कुली' (1984), 'द बर्निंग ट्रेन' (1980), 'चेन्नई एक्सप्रेस' (2000) जैसी फिल्मों के टाइटल्स से ही पता चलता है कि फिल्म की कहानी रेल के इर्द-गिर्द घूमने वाली होगी।

फिल्मी दृश्यों में ट्रेन: बॉलीवुड में कई ऐसी फिल्में बनीं, जिनकी शुरुआत में ही रेल दिखाई गई, जैसे- दोस्त (1974)। कुछ फिल्मों का क्लाइमैक्स रेलवे स्टेशन पर फिल्माया गया है, जैसे- 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे'(1995)। इसके अलावा शाहरुख खान की कुछ और फिल्मों में भी ट्रेन की अपनी विशेष भूमिका रही है। 'दिल से', 'स्वदेश', 'वीर-जारा', 'रईस', 'पठान', 'जवान' आदि कई फिल्मों में लाजवाब रेल सीन फिल्माए गए हैं।

धर्मेंद्र का रेल कनेक्शन: पिछले वर्ष दिवंगत हुए सदाबहार अभिनेता धर्मेंद्र की शुरुआती फिल्में जैसे-'शोला और शबनम', 'आपकी परछाइयां', 'फूल और पत्थर' से लेकर 'दोस्त' आदि में रेल का रोल इंपॉर्टेंट रहा। दिलचस्प बात यह है कि धर्मेंद्र ने फिल्मों में आने से पहले कुछ समय तक रेलवे में क्लर्क की नौकरी भी की थी।

ट्रेन में फिल्माए गए कुछ यादगार दृश्य: फिल्मों में ट्रेन के कई ऐसे दृश्य फिल्माए गए हैं, जो यादगार बन गए। 'गांधी' (1982) में एक छोटा सा सीन है, जोकि गांधी जी के जीवन का टर्निंग पॉइंट बना। दक्षिण अफ्रीका में ट्रेन के फर्स्ट क्लास में यात्रा करने के कारण एक अंग्रेज, नाराज होकर, गांधीजी को एक स्टेशन पर सामान समेत डिब्बे के बाहर फेंक देता है। इसके अलावा इसी फिल्म में गांधीजी की ट्रेन से यात्रा के कुछ और सीन भी हैं। 'जब वी मेट' (2007) में फिल्म का नायक मुंबई से ट्रेन में चढ़ता है। रतलाम स्टेशन पर नायिका की ट्रेन छूटती है। आगे दोनों की ट्रेन जर्नी, रेल कर्मियों के साथ उनका वार्तालाप आदि कई रोचक, मनोरंजक दृश्य हैं। 'बड़े मियां, छोटे मियां' (1998) में अमिताभ बच्चन और गोविंदा ट्रेन की बोगी के सभी यात्रियों का सामान, चालाकी से लूट लेते हैं। कई कलाकारों ने फिल्म में रेल कर्मियों के रोल निभाए हैं। 'अजनबी' (1974) में राजेश खन्ना स्टेशन मास्टर बने हैं। 'विधाता' (1982) में दिलीप कुमार और शम्मी कपूर ट्रेन ड्राइवर बने हैं। ओम प्रकाश ने 'जूली' (1975) में ट्रेन ड्राइवर का रोल निभाया है।

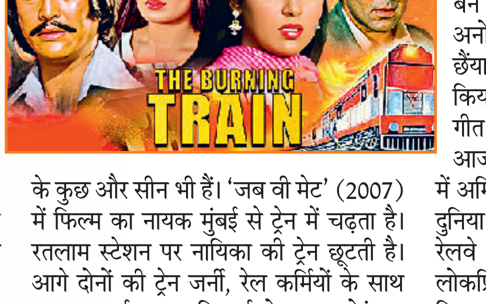

ट्रेन पर आधारित गीत: ट्रेन के भीतर, ट्रेन की छत पर या ट्रेन के इर्द-गिर्द कई फिल्मों के गीत भी फिल्माए गए हैं, जो काफी लोकप्रिय हुए। 'आओ बच्चो तुम्हें दिखाएं झांकी हिंदुस्तान की' ट्रेन में फिल्माए गए फिल्म 'जागृति' (1954) के इस गाने में अध्यापक की भूमिका में अभि भट्टाचार्य, छात्रों को भारत देश के इतिहास से अवगत करवाते हैं। 'आशीर्वाद' (1968) में अशोक कुमार द्वारा गाया और उन्हीं पर फिल्माया रैप सांग 'रेलगाड़ी छुक-छुक-छुक' बॉलीवुड का शुरुआती रैप सॉन्ग है। इसके कई रिमिक्स भी बन चुके हैं। 'दिल से' (1998) में एक नया, अनोखा प्रयोग किया गया था। फिल्म मे 'चल छैंया छैंया' गीत रेल के डिब्बों पर पिक्चराइज किया गया डांस सॉन्ग है। 'दोस्त' (1974) का गीत 'गाड़ी बुला रही है, सीटी बजा रही है...' आज भी लोकप्रिय है। फिल्म 'कुली' (1983) में अमिताभ बच्चन पर फिल्माए गए गीत 'सारी दुनिया का बोझ हम उठाते हैं' में भी ट्रेन और रेलवे प्लेटफॉर्म के दृश्य नजर आते हैं। इन लोकप्रिय गीतों के अलावा भी रेल में हर मूड, सिचुएशन के गानों, दृश्यों की लंबी लिस्ट है। *